EDU TERIA

E - D.N.A

Daily Newspaper Analysis

Prelims Mains Essay

By- Nikhil Ranjan

Useful For Prelims

Date: 27 December 2025

‘बालवीर’ वैभव की कीर्तिमान से मित्रता, सपनों से साझेदारी

बल्ले और गेंद के प्रति समर्पण से फलक पर चमका समस्तीपुर का 14 वर्षीय क्रिकेटर वैभव सूर्यवंशी राष्ट्रपति ने 20 बच्चों को दिया प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार

उपलब्धि

अक्षय पांडेय • जागरण

- कैमूर के 11 वर्षीय कमलेश को मरणोपरांत पुरस्कार, बच्चे को बचाने में गंवा दी थी जान
- वैभव सूर्यवंशी को सम्मानित किए जाने पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने दी बधाई

वैभव सूर्यवंशी की उपलब्धि

- 12 वर्ष व 284 दिन की उम्र में रणजी में पदार्पण
- विजय हजारे ट्राफी में 84 गेंदों में 190 रन
- आइपीएल 2025 में 38 गेंदों में 101 रन
- अंडर-19 एशिया कप में 95 गेंदों में 171 रन
- यूथ टेस्ट में 62 गेंदों में 104 रन
- सैय्यद मुश्ताक अली ट्राफी में 61 गेंदों में 108 रन
- राइजिंग स्टार्स एशिया कप में 42 गेंदों में 144 रन

नई दिल्ली में शुक्रवार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु से प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार प्राप्त करते क्रिकेटर वैभव सूर्यवंशी और कमलेश (मरणोपरांत) के पिता दुखी जायसवाल • प्रेट्र

पटना : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने शुक्रवार को वैभव सूर्यवंशी समेत 20 बच्चों को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित किया। बिहार के कैमूर के 11 वर्षीय कमलेश को मरणोपरांत पुरस्कार मिला, उसने नदी में डूबते एक बच्चे को बचाने में अपनी जान गंवा दी थी। वहीं उप्र के नौ साल के बहादुर अजय राज ने नदी किनारे मगरमच्छ से अपने पिता की जान बचाई थी।

समस्तीपुर जिले के ताजपुर में उन दिनों स्कूल की घंटी से पहले बैट से सामना करती गेंद की टक-टक सुनाई पड़ती थी। सुबह-सुबह जब पढ़ने के लिए बच्चों के कदम विद्यालय की ओर भागते, तो घर की छत पर एक बच्चा हेलमेट-पैड पहने पिता की गेंद पर जोरदार प्रहार करता था। कभी कवर तो कभी स्ट्रेट ड्राइव। पिता जब थक जाते, तो सात वर्षीय बच्चा गेंद के स्वयं की ओर आने की कल्पना कर हवा में बल्ला चलाता रहता। पिता के संघर्ष, त्याग और अटूट विश्वास के दम पर आंखों में बड़े सपने और दिल में क्रिकेट का जुनून लिए वैभव सूर्यवंशी के पास अगर कुछ नैसर्गिक था, तो वो परिश्रम और क्रिकेट के प्रति समर्पण रहा। 14 वर्षीय वैभव को उसी समर्पण का सम्मान प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार के रूप में मिला, जब राष्ट्रपति ने उन्हें इससे अलंकृत किया। प्रधानमंत्री मोदी ने वैभव का हौसला बढ़ाया। वे वैभव और उनके माता-पिता से पटना में पहले भी मिल चुके हैं। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने वैभव को बधाई दी।

इस जगह तक पहुंचने पर आज जिस खिलाड़ी की प्रतिभा सबको आश्चर्यचकित कर रही है, उसके पीछे संघर्ष की लंबी कहानी है। बचपन आम बच्चों से अलग। खिलौनों के स्थान पर हाथों में बल्ला और गेंद पर एकटक निगाहें। मां की दुआ और किसान पिता के भरोसे के बूते घर की सीमित सुविधाओं में गगनचुंबी छक्कों की तरह उड़ान भरते सपने। छोटी उम्र में ही वैभव ने स्वयं को तय दिनचर्या में बांध लिया था। पढ़ाई और खेल के बीच संतुलन बनाना जल्दी सीख लिया। धूप में अभ्यास, थकान से जूझना और बार-बार स्वयं को बेहतर साबित करना, यही दिनचर्या बन गई। देश-दुनिया के मानचित्र पर बिहार को चमकाने वाले इस 'बालवीर' की कहानी के साथ हजारों प्रेरणाएं जुड़ीं।

भाई को बचाने के लिए स्वयं दे दी जान, ‘बालवीर’ के लिए सम्मान लेते पिता की आंखें भर आईं

संवाद सहयोगी, जागरण • मोहनियां (कैमूर): अपने बड़े भाई को बचाकर स्वयं मौत के मुंह में चले गए बच्चे को मरणोपरांत जब प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित किया गया तो माता-पिता की आंखें भर आईं। कैमूर जिले के मोहनियां थाना क्षेत्र स्थित भदवलिया गांव के कमलेश के माता-पिता ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु से शुक्रवार को यह सम्मान ग्रहण किया।

घटना इसी वर्ष 25 जुलाई की है। दुखी जायसवाल का पुत्र कमलेश (11) अपने बड़े भाई पवन (13) के साथ गांव के ही विद्यालय में पढ़ने गया था। वहां से दोनों दुर्गावती नदी में स्नान करने चले गए। इसी दौरान पवन गहरे पानी में डूबने लगा, पर आसपास कोई नहीं था, जो बचा सके। यह देख कमलेश ने अपने भाई को बचाने के लिए

मोहनियां के 11 वर्षीय कमलेश के पिता व माता की आंखें दिवंगत पुत्र के लिए सम्मान ग्रहण करते समय भर आईं

कमलेश (फाइल फोटो) • सौ. स्वजन

जान की बाजी लगा दी। उसने उसे तो बचा लिया, पर स्वयं मौत का शिकार हो गया। पवन ने घर जाकर सारी बात बताई तो स्वजन और गांव के लोग दौड़े आए, लेकिन उसका कहीं कोई अता-पता नहीं चला। उसका झोला नदी किनारे पड़ा था। एसडीआरएफ की टीम ने काफी प्रयास के बाद अगले दिन उसका शव ढूंढकर निकाला। कमलेश पढ़ने में मेधावी था, माता-पिता को उससे बहुत आशा थी। अपने बड़े भाई की जान बचाने के लिए स्वयं को जोखिम में डालते हुए उसने अपनी बहादुरी भी साबित कर दी। उसके इस साहसिक कृत्य की चर्चा पूरे जिले में हुई। भारत सरकार ने उसे प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित करने का निर्णय किया। उसके पिता दुखी जायसवाल व माता रीना देवी की आंखें दिवंगत पुत्र के लिए सम्मान ग्रहण करते समय भर आईं। उन्होंने कहा कि अपने पुत्र की यादों को यह समर्पित कर रहे हैं।

संबंधित खबरें » जागरण सिटी व पेज 17

Dainik Jagaran Page No-1

वैभव को रोज समस्तीपुर से पटना बस से लाते थे पिता

बढ़ते कदम

जासं, पटना : वैभव सूर्यवंशी के क्रिकेट का जुनून देख पिता संजीव सूर्यवंशी ने अकादमी में अभ्यास करा खेल में निखार लाने का मन बना लिया। समस्तीपुर में बेहतर संभावना न देख रोज पटना आने की योजना बन गई। तीन भाइयों में बीच वाले बेटे के लिए संघर्ष की यात्रा सूर्य के निकलने से पहले शुरू होने लगी। रात तीन बजे उठ मां आरती सूर्यवंशी खाना बना टिफिन तैयार करतीं, पिता सुबह पांच बजे बेटे को लेकर घर से निकल जाते।

राजधानी के संपतचक में जेनएक्स अकादमी के प्रशिक्षक व वैभव के प्रारंभिक कोच मनीष ओझा बताते हैं, वैभव के पिता उसे रोज समस्तीपुर से बस से पटना लाते थे। तब उम्र नौ से 10 साल रही होगी। जब तक वह अभ्यास करता, पिता मैदान पर रहते। तब वो एक दिन में 500 से अधिक गेंदें खेलता था। बीच में समय देख उसे खाना खिलाते। समस्तीपुर से आने-जाने में एक दिन पूरा लग जाता, तो वो एक दिन छोड़कर पटना आने लगा। उसमें किसी भी छोटे या बड़े खिलाड़ी से अधिक परिश्रम करने की ललक रही। उसने कभी हालात को दोष नहीं दिया, बल्कि अपनी मेहनत को और तेज कर दिया। धौनी एवं कई चयनकर्ताओं को उसकी बल्लेबाजी का वीडियो बनाकर भेजा। समय के साथ मैदान पर उसका आत्मविश्वास साफ झलकने लगा। विजय हजारे में शुक्रवार को खेला गया मैच राष्ट्रपति से सम्मानित होने के कारण वैभव सूर्यवंशी नहीं खेल सके। वे 29 दिसंबर को मेघालय के खिलाफ रांची में होने वाले मुकाबले में वे उपलब्ध होंगे। इसके बाद अंडर-19 इंडिया के लिए भारत बनाम साउथ अफ्रीका सीरीज में भाग लेने के लिए वे रवाना हो जाएंगे।

नई दिल्ली में वीर बाल दिवस पर प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार प्राप्त करने के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से बात करते क्रिकेटर वैभव सूर्यवंशी • सौः प्रेट्र

युवा क्रिकेटरों के प्रेरणास्रोत हैं वैभव : बीसीए अध्यक्ष

जागरण संवाददाता, पटना : बिहार क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष हर्ष वर्धन ने बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित किए जाने पर बधाई देते हुए कहा कि 14 वर्षीय खिलाड़ी की यात्रा प्रेरणादायक है। यह उनकी असाधारण प्रतिभा, अनुशासन और निर्भीक खेल दृष्टिकोण को दर्शाता है। वैभव की उपलब्धियों ने बिहार क्रिकेट को गौरवान्वित और देशभर के युवा क्रिकेटरों को प्रेरित किया है।

Dainik Jagaran Page No-IV

शवन सिंह नें आपरेशन सिंदूर के दौरान ड्रोन हमलों के बीच सैनिकों तक पहुंचाई थी मदद

वीर बाल दिवस

संजीव गुप्ता • जागरण

नई दिल्ली : वीर बाल दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने शुक्रवार को 18 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से 20 बच्चों को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित किया। इस साल दो बच्चों को मरणोपरांत यह पुरस्कार दिया गया। उनके पुरस्कार माता-पिता ने लिए। विज्ञान भवन में आयोजित समारोह में सभी पुरस्कार साहसिक कृत्यों और खेल, विज्ञान व कला के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिए गए। समारोह को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति ने पुरस्कृत बच्चों की प्रशंसा की और कहा कि वे देश के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।

पंजाब में फिरोजपुर के 10 वर्षीय शवन सिंह ने आपरेशन सिंदूर के दौरान असाधारण साहस का परिचय देते हुए ड्रोन हमलों की स्थिति में भी सैनिकों तक मदद पहुंचाई थी। वहीं, उत्तर प्रदेश के नौ साल के बहादुर अजय राज ने नदी किनारे मगरमच्छ से पिता की जान बचाई थी। बाराबंकी की पूजा को किसानों के लिए कृषि प्रदूषण कम करने वाली मशीन बनाने के लिए सम्मान मिला। झारखंड की 14 वर्षीय फुटबालर अनुष्का को हाल में अंडर-17 महिला फुटबाल टीम में शामिल किया गया है। तेलंगाना के मेडचल मलकागिरी निवासी 16 वर्षीय विश्वनाथ ने दुनिया के सात महाद्वीपों की सबसे ऊंची चोटियों (सेवन समिट्स) पर सफलतापूर्वक चढ़ाई पूरी की। वह ऐसा करने वाले सबसे कम उम्र के भारतीय और दुनिया के दूसरे सबसे कम उम्र के पर्वतारोही हैं। केरल के रहने वाले 11 वर्षीय सिदान के दो मित्र करंट की चपेट में आ गए थे। सिदान ने सूझबूझ दिखाते हुए लकड़ी की मदद से अपने दोनों मित्रों को बचाया। महाराष्ट्र निवासी 17 साल के अर्णव महर्षि को विज्ञान श्रेणी में बाल पुरस्कार मिला है। मिजोरम के नौ वर्षीय हमानते यूट्यूब स्टार हैं, उनके चैनल पर दो करोड़ से अधिक सब्सक्राइबर हैं।

सेना के जवानों तक दूध, चाय व अन्य सामान पहुंचाता शवन। • इंटरनेट मीडिया

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु से पुरस्कार हासिल करते हुए शवन सिंह। • प्रेट्र

दीप्ति शर्मा के रिकॉर्डतोड़ प्रदर्शन से बेटियों का सीरीज पर कब्जा

महिला टी-20

तिरुवनंतपुरम, एजेंसी। दीप्ति शर्मा के रिकॉर्ड तोड़ प्रदर्शन से भारतीय महिला टीम ने शुक्रवार को जीत की हैट्रिक के साथ पांच मैचों की टी-20 सीरीज पर भी कब्जा कर लिया। बुखार के बाद वापसी करने वाली दीप्ति (18/3) की फिरकी और रेणुका सिंह ठाकुर की (21/4) की कहर बरपाती गेंदों ने श्रीलंका को तीसरे टी-20 में सात विकेट पर 112 रन पर रोक दिया।

उसके बाद लक्ष्य शेफाली (79) की तूफानी पारी से 13.2 ओवर में दो विकेट पर 115 रन बनाकर हासिल कर लिया। आठ विकेट की जीत के साथ भारत ने सीरीज में 3-0 की अजेय बढ़त बना ली है। चौथी मुकाबला इसी मैदान पर रविवार को खेला जाएगा। शेफाली ने लगातार दूसरा और करियर का 13वां अर्धशतक लगाया। मंधाना (1) फिर बड़ी पारी नहीं खेल पाईं। शेफाली ने जेमिमा (9) के साथ दूसरे विकेट के लिए 40 और कप्तान हरमनप्रीत कौर (21) के साथ तीसरे विकेट के लिए अटूट 48 रन जोड़े। शेफाली ने 42 गेंद की अपनी पारी में 11 चौके और तीन छक्के जड़े। उन्होंने चौके के साथ टीम को जीत दिलाई।

दिसंबर के बाद अपना पहला टी-20 मैच खेल रहीं रेणुका ने नई गेंद से श्रीलंका के शीर्ष क्रम को झकझोर दिया। उन्होंने फॉर्म में चल रहीं हसिनी परेरा (25) और हर्षिता (2) को एक ओवर में पवेलियन भेजा। उसके बाद नीलाक्षिका सिल्वा (4) और इमेशा दुलानी (27) को आउट किया। दीप्ति ने कप्तान सी अटापट्टू (3), कविशा दिलहारी (20) और मल्शा शेहानी (5) को अपनी फिरकी में फंसाया।

08 विकेट से पराजित किया भारत ने श्रीलंका को तीसरे मुकाबले में 40 गेंद रहते

24 गेंद में वर्मा ने पचास रन पूरे किए जो भारत की ओर से चौथा सबसे तेज अर्धशतक

- 79 रन की पारी शेफाली ने 42 गेंदों में 11 चौकों और तीन छक्कों की मदद से खेली

तिरुवनंतपुरम में शुक्रवार को विकेट लेने के बाद जश्न मनातीं दीप्ति शर्मा।

दीप्ति 150 विकेट व हजार रन बनाने वाली इकलौती

दीप्ति टी-20 में 150 विकेट लेने और 1000 या उससे अधिक विकेट लेने वाली दुनिया की पहली क्रिकेटर (पुरुष और महिला) बन गईं। वह 131 मुकाबलों में 6.09 की इकोनॉमी से 151 विकेट झटक चुकी हैं और 1100रन भी बना चुकी हैं। उन्होंने महिला क्रिकेट में ऑस्ट्रेलिया की मेगन शट (151) के फटाफट क्रिकेट में सर्वाधिक विकेट लेने का रिकॉर्ड भी बराबर कर लिया।

Hindustan Page No-20

वर्ष 2025 में कुछ भी असाधारण नहीं रहा | लेखा जोखा | भारत अब अगले साल होने वाले मैचों को लेकर कर रही तैयारी

भारतीय हाकी के लिए कठिन साल, महिला टीम का प्रदर्शन चिंताजनक

नई दिल्ली, 26 दिसंबर (भाषा)।

पिछले साल ओलंपिक कांस्य झोली में डालने के बाद 2025 भारतीय हाकी के लिए कुछ खास नहीं रहा हालांकि पुरूष टीम ने लगभग एक दशक बाद एशिया कप जीता लेकिन महिला टीम के प्रदर्शन में निरंतर गिरावट चिंता का सबब बनी हुई है।

भारतीय हाकी का यह शताब्दी वर्ष भी है लेकिन आठ बार की ओलंपिक चैंपियन टीम के लिए वर्ष 2025 में कुछ भी असाधारण नहीं रहा। इस वर्ष भारतीय हाकी की सबसे बड़ी उपलब्धि पुरूष टीम की राजगीर में एशिया कप में जीत रही जहां आठ साल बाद खिताब जीतकर उसने अगले साल 14 से 30 अगस्त तक नीदरलैंड और बेल्जियम में होने वाले एफआइएच विश्व कप का टिकट कटाया। भारतीय टीम ने एक बार फिर उपमहाद्वीप में दबदबा बनाया और सबसे अच्छी बात यह रही कि 15 गोल दागे जबकि सिर्फ दो गंवाये। फाइनल में भारत ने गत चैम्पियन दक्षिण कोरिया को 4 . 1 से हराया जिसमे दिलप्रीत सिंह, सुखजीत सिंह और अमित रोहिदास ने गोल किये। इससे पहले एफआइएच प्रो लीग में प्रदर्शन निराशाजनक रहा । हरमनप्रीत सिंह की टीम नौ टीमों में आठवें स्थान पर रही और नीचे खिसकने से बाल बाल बची है। घरेलू चरण में भुवनेश्वर में पांच मैच जीतने के बाद यूरोपीय चरण में लगातार सात मैच गंवाये। अजलन शाह कप में भारत की युवा टीम ने रजत पदक जीता। छह साल बाद टूर्नामेंट खेल रही भारतीय टीम फाइनल में दुनिया की तीसरे नंबर की टीम बेल्जियम से एक गोल से हारी। लेकिन नये कप्तान डिफेंडर संजय के साथ युवा टीम गई थी जिसमे हरमनप्रीत और मनप्रीत जैसे सीनियर नहीं थे। पुरूष जूनियर टीम ने इस महीने चेन्नई में जूनियर हाकी विश्व कप में नौ साल बाद कांस्य पदक जीता। कांस्य के मुकाबले में अर्जेंटीना से दो गोल से पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए भारत ने 4.2 से जीत दर्ज की ।

भारत की निगाहें अब अगले साल विश्व कप के अलावा जापान में एशियाई खेलों में स्वर्ण जीतकर लास एंजिलिस ओलंपिक 2028 में सीधे जगह बनाने पर लगी होंगी। दूसरी ओर तोक्यो ओलंपिक 2021 में चौथे स्थान पर रहने के बाद महिला टीम का प्रदर्शन लगातार खराब हुआ है और पिछले साल टीम पेरिस ओलंपिक के लिए क्वालीफाई नहीं कर सकी थी।

विश्व कप के अलावा एशियाई खेलों पर होंगी नजरें

अजलन शाह कप में भारत की युवा टीम ने रजत पदक जीता। छह साल बाद टूर्नामेंट खेल रही भारतीय टीम फाइनल में दुनिया की तीसरे नंबर की टीम बेल्जियम से एक गोल से हारी। लेकिन नए कप्तान संजय के साथ युवा टीम गई थी जिसमे हरमनप्रीत और मनप्रीत जैसे सीनियर नहीं थे। पुरुष जूनियर टीम ने इस महीने चेन्नई में जूनियर हाकी विश्व कप में नौ साल बाद कांस्य पदक जीता। भारत की नजरें अब अगले साल विश्व कप के अलावा जापान में एशियाई खेलों में स्वर्ण जीतकर लास एंजिलिस ओलंपिक 2028 में सीधे जगह बनाने पर लगी होंगी।

Jansatta Page No-20

अभियान | जांच में तेजी के साथ बढ़ गए तपेदिक के मरीज, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने की उच्च स्तरीय बैठक

दो वर्ष बढ़ाया गया तपेदिक उन्मूलन का राष्ट्रीय लक्ष्य

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 26 दिसंबर।

देश में तपेदिक (टीबी) उन्मूलन का अभियान अभी दो साल और चलेगा। जांच के दौरान बढ़े मरीजों की संख्या को देखते हुए केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने टीबी उन्मूलन का राष्ट्रीय लक्ष्य साल 2025 से बढ़ाकर साल 2027 कर दिया है। केंद्रीय क्षय प्रभाग की जानकारी के अनुसार देश में अक्तूबर 2025 तक टीबी के 2077591 मरीज मिले। प्रति लाख के आधार पर साल 2025 में यह आंकड़ा 195 मरीज पर पहुंच गया, जबकि 2020 में यह आंकड़ा 131 पर था।

स्वास्थ्य मंत्रालय से मिली जानकारी के अनुसार शुक्रवार को केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के स्वास्थ्य मंत्री व अधिकारियों के साथ उच्च स्तरीय बैठक की। इस दौरान स्वास्थ्य सेवाओं के पहुंचाने, मरीजों की संतुष्टि बढ़ाने, नियामक निगरानी में सुधार करने और 2027 तक ट्यूबरकुलोसिस (टीबी) को सार्वजनिक स्वास्थ्य की चिंता के तौर पर खत्म करने के राष्ट्रीय लक्ष्य को आगे बढ़ाने पर चर्चा हुई।

राज्य को मिलेगी हर संभव मदद

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि राज्य को हर संभव मदद मिलेगी। छत्तीसगढ़ में कुष्ठ रोग के प्रबंधन को प्राथमिकता के तौर पर लिया जाएगा। इसके अलावा दूसरे राज्यों के साथ ही मिलकर स्वास्थ्य के क्षेत्र में बदलाव लाने के लिए बड़े स्तर पर अभियान को चलाया जाएगा। बैठक में दवा विनियमन को मजबूत करने, निदान को बेहतर बनाने, अस्पताल प्रबंधन को पेशेवर बनाने, चिकित्सा शिक्षा क्षमता को बढ़ाने और टीबी मुक्त भारत की दिशा में तेजी से प्रयास के लिए काम किया जाएगा।

भारतीय दवाओं की बढ़ रही है विदेश में विश्वसनीयता : नड्डा

भारतीय दवाओं की गुणवत्ता में सुधार के साथ विदेश में विश्वसनीयता भी बढ़ रही है। यह कहना है केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा का। शुक्रवार को मंत्री ने मंत्रालय की सचिव का अतिरिक्त प्रभार संभाल रही निवेदिता शुक्ला वर्मा के साथ भारतीय फार्माकोपिया आयोग (आइपीसी) की समीक्षा बैठक की। इस दौरान मंत्री ने कहा कि दुनिया के 19 देशों में भारतीय फार्माकोपिया को मान्यता मिल चुकी है, जो आत्मनिर्भर भारत और विकसित भारत की दिशा में एक पहल है।

Jansatta Page No-10

बच्चों का सम्मान

देश के बहादुर, कामयाब और बहुत खास बच्चों का सम्मान सुखद व स्वागतयोग्य है। इस वर्ष 18 राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों के 20 बच्चों को राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से नवाजा गया है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने शुक्रवार को नई दिल्ली में वीरता, सामाजिक सेवा, पर्यावरण, खेल, कला-संस्कृति तथा विज्ञान-प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में असाधारण प्रतिभा का प्रदर्शन करने वाले बच्चों को सम्मानित करके पूरे देश को प्रेरित किया है। राष्ट्रपति ने उचित ही कहा है कि पुरस्कार विजेता बच्चों ने अपने परिवारों, समुदायों और पूरे देश को गौरवान्वित किया है। हर बच्चे के साथ सफलता की अद्भुत गाथा जुड़ी है। इन बच्चों में सबसे चर्चित नाम बिहार के क्रिकेटर वैभव सूर्यवंशी का है। महज 14 की आयु में वैभव ने बड़ों की दुनिया में भी कीर्तिमानों की शुरुआत कर दी है। निस्संदेह, हर बच्चे में एक प्राकृतिक प्रतिभा होती है, जिसे मांजने की जिम्मेदारी पूरे परिवार और समाज को उठानी चाहिए। ये बाल प्रतिभाएं प्रेरणा स्रोत हैं और इनसे पूरे समाज को सीखना चाहिए।

उन वीर बच्चों को भी विशेष रूप से याद करना चाहिए, जो वीरता का प्रदर्शन करते हुए इस दुनिया से चले गए। तमिलनाडु की नौ वर्षीया बेटी व्योमा प्रिया हो या कैमूर, बिहार के ग्यारह वर्षीय बहादुर बालक कमलेश कुमार, इन्होंने दूसरे बच्चों की जान बचाने की कोशिश में अपनी जान गंवाई है। बहादुरी की एक गाथा आगरा के बालक अजयराज की है। जब चंबल नदी के किनारे गए उनके पिता को मगरमच्छ ने जकड़ लिया, तब इस बालक ने अदम्य साहस का प्रदर्शन किया। पास पड़े एक डंडे से मार-मारकर खूंखार मगरमच्छ से अपने पिता को छुड़ा लेना कोई मामूली बात नहीं है। आजकल किसी खतरे की आशंका देख बड़े लोग भी भाग खड़े होते हैं। ध्यान रहे, जोखिम उठाने वाले लोग ही ज्यादा कामयाब होते हैं। ठीक ऐसा ही मामला केरल के मोहम्मद सिदान पी का है। दो दोस्तों को करंट से बचाने के लिए वह जान पर खेल गए।

वीर बाल दिवस पर राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित देश भर की 20 बाल प्रतिभाएं सबके लिए प्रेरणा स्रोत हैं और इनके पुरुषार्थ से पूरे समाज को सीखना चाहिए।

चार वीर बच्चों में से दो बच्चों को मरणोपरांत सम्मानित किया गया है। यहां यह ध्यान देने की बात है कि ये पुरस्कार वीर बाल दिवस पर दिए जाते हैं। दसवें सिख गुरु, गुरु गोबिंद सिंह जी के दो सबसे छोटे पुत्र, साहिबजादा जोरावर सिंह जी और साहिबजादा फतेह सिंह जी को 26 दिसंबर, 1704 को सरहिंद (फतेहगढ़ साहिब, पंजाब) में ईंटों से जिंदा चुनवाकर शहीद कर दिया गया था, क्योंकि उन्होंने अपना धर्म छोड़ने से इनकार कर दिया था।

सम्मानित वीर बालकों के अलावा ऐसे बालक भी हैं, जो अपने-अपने क्षेत्र में अपना, अपने समाज और देश का नाम रोशन कर रहे हैं। ऐसे बच्चों को सम्मानित करना जरूरी है। देश की एक दिव्यांग पुत्री शिवानी होसूरू उप्पारा ने आर्थिक-शारीरिक सीमाओं को पार करते हुए खेल जगत में असाधारण उपलब्धियां हासिल की हैं। सात वर्षीय वाका लक्ष्मी प्रग्निका जैसे प्रतिभाशाली बच्चों के कारण ही भारत को विश्व स्तर पर शतरंज की नई महाशक्ति माना जा रहा है। बाराबंकी की पूजा को पर्यावरण के क्षेत्र में काम के लिए सम्मानित किया गया है। पूजा ने कृषि से निकलने वाली धूल और वायु प्रदूषण को कम करने के लिए एक अभिनव मशीन का निर्माण किया है। रांची, झारखंड की अनुष्का कुमारी को बेहतरीन फुटबॉलर के रूप में सम्मान हासिल हुआ है। इसके अलावा, ऑपरेशन सिंदूर के दौरान सैनिकों तक मदद पहुंचाने वाले दस वर्षीय श्रवण सिंह को उनकी सेवा के लिए सम्मानित किया गया है। ये बच्चे स्वयं ही संदेश हैं कि अपने देश का भविष्य उज्ज्वल है।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार' से 20 बच्चों को सम्मानित किया, प्रधानमंत्री बोले- भारत का भविष्य उज्ज्वल

जेन जी विकसित भारत के लक्ष्य तक पहुंचाएंगे: मोदी

वीर बाल दिवस

नई दिल्ली, विशेष संवाददाता/एजेंसी। वीर बाल दिवस पर देश के 20 नौनिहालों को साहसिक कृत्यों और खेल, विज्ञान, कला के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान पर 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार' दिए गए। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने शुक्रवार को ये पुरस्कार प्रदान किए। इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बच्चों से कहा कि वे बड़े सपने देखें और कड़ी मेहनत करें। पीएम ने कहा कि जेन जी और जेन अल्फा ही हमें विकसित भारत के लक्ष्य तक ले जाएंगे।

पुरस्कार पाने वालों में 14 साल के क्रिकेटर वैभव सूर्यवंशी भी इनमें शामिल हैं। 20 बच्चों में से दो को मरणोपरांत पुरस्कार दिया गया। शुक्रवार को नई दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में आयोजित समारोह में राष्ट्रपति मुर्मु ने विजेता बच्चों को बधाई देते हुए कहा कि उन्होंने अपने परिवारों, अपने समुदायों और पूरे देश को गौरवान्वित किया है। उन्होंने उम्मीद जताई कि पुरस्कार पाने वाले बच्चों से देश के अन्य सभी बच्चे प्रेरित होंगे। इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी विजेता बच्चों से मुलाकात की और उन्हें संबोधित किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि जेन जी और जेन अल्फा ही हमें विकसित भारत के लक्ष्य तक ले जाएंगे।

पीएम मोदी ने कहा, भारत का भविष्य उसके बच्चों और युवाओं के भविष्य से ही उज्ज्वल होगा। उनका साहस, उनकी प्रतिभा और उनका समर्पण राष्ट्र की प्रगति को दिशा देगा। इसी विश्वास के साथ, इसी जिम्मेदारी के साथ और इसी निरंतर गति के साथ भारत अपने भविष्य की ओर आगे बढ़ता रहेगा।'

रटने के बजाय सोचने पर जोर दें: मोदी ने कहा, आज फोकस प्रैक्टिकल लर्निंग पर है। बच्चों में रटने के बजाए, सोचने की आदत विकसित हो। उनमें सवाल पूछने का साहस और समाधान खोजने की क्षमताएं विकसित हों। इसके लिए पहली बार इस दिशा में प्रयास हो रहे हैं। हर सेक्टर में युवाओं के लिए नए अवसर खुल रहे हैं। आज भारत के सामने परिस्थितियां अभूतपूर्व हैं। आज भारत दुनिया के सबसे युवा देशों में से एक है। आने वाले 25 वर्ष भारत की दिशा तय करने वाले हैं। पीएम ने कहा, आज का युवा ऐसे समय में बड़ा हो रहा है, जब अवसर पहले से कहीं ज्यादा हैं। विकसित भारत की मजबूत नींव के लिए भारत की एजुकेशन पॉलिसी में भी अहम सुधार किए गए हैं।

आपकी सफलता देश की सफलता बने: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि पहले युवा सपने देखने से भी डरते थे, क्योंकि पुरानी व्यवस्थाओं में यह माहौल बन गया था कि कुछ अच्छा हो ही नहीं सकता। चारों तरफ निराशा का वातावरण बना दिया गया था। लोगों को लगने लगा था कि मेहनत करके क्या फायदा है। लेकिन आज देश प्रतिभा को खोजता है। उन्हें मंच देता है। उनके सपनों के साथ 140 करोड़ देशवासियों की ताकत लग जाती है। पीएम मोदी ने कहा, डिजिटल इंडिया की सफलता के कारण आपके पास इंटरनेट की ताकत है। आपके पास सीखने के संसाधन हैं। जो साइंस, टेक और स्टार्टअप में जाना चाहते हैं, उनके लिए स्टार्टअप इंडिया जैसे मिशन हैं। जो बच्चे या युवा स्पोर्ट्स में आगे बढ़ रहे हैं, उनके लिए खेलो इंडिया मिशन है।

आज देश प्रतिभा को खोजता है: पीएम ने कहा कि पहले युवा सपने देखने से भी डरते थे, लेकिन आज देश प्रतिभा को खोजता है। उन्हें मंच देता है। उनके सपनों के साथ 140 करोड़ देशवासियों की ताकत लग जाती है। पीएम मोदी ने कहा, डिजिटल इंडिया की सफलता के कारण आपके पास इंटरनेट की ताकत है। आपके पास सीखने के संसाधन हैं।

यह पीढ़ी विकसित भारत के लक्ष्य की तरफ ले जाएगी : मोदी ने कहा, यहां मेरा युवा भारत है। संगठन से जुड़े इतने सारे युवा यहां एकत्रित हैं। एक तरह से आप सभी जेन जी हैं, जेल अल्फा भी हैं। आपकी पीढ़ी ही भारत को विकसित भारत के लक्ष्य की तरफ ले जाएगी। मैं जेन-जी की योग्यता और आत्मविश्वास देखता हूं, समझता हूं। इसलिए आप पर बहुत भरोसा करता हूं। मोदी ने कहा, हमारे यहां कहा गया है- बालादपि ग्रहीतव्यं विद्या युक्तमुक्तं मनीषिभिः, अमृतं विषसंयुक्तं यदुक्तं तदपि त्यजेत्,. अर्थात, अगर छोटा बच्चा भी कोई बुद्धिमानी की बात करे तो उसे ग्रहण करना चाहिए। यानी उम्र से कोई छोटा नहीं होता और कोई बड़ा भी नहीं होता। आप बड़े बनते हैं अपने कामों और उपलब्धियों से।

नई दिल्ली में शुक्रवार को 'वीर बाल दिवस' के मौके पर आयोजित कार्यक्रम में 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार' विजेताओं के साथ पीएम नरेंद्र मोदी। इस दौरान वह पुरस्कार पाने वाले क्रिकेटर वैभव सूर्यवंशी से भी मिले और उनकी सराहना की। ● पेट

नई दिल्ली में शुक्रवार को 'वीर बाल दिवस' के मौके पर आयोजित कार्यक्रम में बिहार के कमलेश (मरणोपरांत) को मिला सम्मान ग्रहण करते उनके पिता दुखी शाह।

02 बच्चों को मरणोपरांत बाल पुरस्कार से सम्मानित किया गया है

18 राज्यों से किया गया है पुरस्कार के लिए बच्चों का चयन

"पुरस्कार पाने वाले बच्चों से देश के सभी बच्चे प्रेरित होंगे। उन्होंने अपने परिवारों, अपने समुदायों और पूरे देश को गौरवान्वित किया है
-द्रौपदी मुर्मु, राष्ट्रपति

"मैं भारत के युवाओं से यही अपेक्षा करता हूं कि बड़े सपने देखें, कड़ी मेहनत करें और अपने आत्मविश्वास को भी भी कमजोर न पड़ने दें।
-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

श्रवण ने जंग में सैनिकों को मदद दी

फिरोजपुर पंजाब के रहने वाले दस वर्षीय श्रवण सिंह को 'ऑपरेशन सिंदूर' में सैनिकों की मदद के लिए राष्ट्रीय बाल पुरस्कार दिया गया। श्रवण ने पाक के खिलाफ अभियान में गांव में जवानों के लिए दूध, चाय, छाछ, बर्फ ले जाया करते थे।

संघर्ष से राष्ट्रीय सम्मान तक पहुंची अनुष्का

रांची। गांव की पगडंडियों से देश के सबसे बड़े सम्मान तक पहुंचना आसान नहीं होता। संसाधनों की कमी और भविष्य की अनिश्चितता के बीच अगर कोई अपने सपनों को थामे रखे और उन्हें साकार कर दिखाए, तो वह सिर्फ खिलाड़ी नहीं, प्रेरणा बन जाती है। झारखंड की 14 वर्षीया फुटबॉलर अनुष्का ऐसी ही प्रेरणा का नाम है। शुक्रवार को उन्हें राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इनको मिला सम्मान

खेल
वैभव सूर्यवंशी, बिहार : 14 वर्षीय वैभव विस्फोटक बल्लेबाज के रूप में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तेजी से उभर रहे हैं, गत एक वर्ष में वैभव ने हर फॉर्मेट में जबरदस्त बल्लेबाजी से दुनियाभर के क्रिकेट प्रेमियों के दिलों में जगह बनाई है

वाका लक्ष्मी प्रग्निका, गुजरात : सूरत निवासी सात वर्षीय प्रग्निका 2025 में 'फिडे वर्ल्ड स्कूल वेस चैंपियनशिप' में अंडर-7 बालिका श्रेणी में विश्व चैंपियन बनीं, स्पर्धा के दौरान सभी नौ मुकाबले जीतकर स्वर्ण पदक हासिल किया

अनुष्का, झारखंड : 14 वर्षीय फुटबॉलर अनुष्का को अंडर-17 महिला फुटबॉल टीम में शामिल किया गया है, उनकी मां दिहाड़ी श्रमिक हैं जबकि पिता बीमार रहते हैं, बायजूद अनुष्का ने खेल के प्रति अपना रुझान बनाए रखा

ज्योति, हरियाणा : सिरसा की ज्योति पैरा एथलीट हैं, उन्होंने शॉटपुट, भाला व डिस्कस थ्रो में कई राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय पदक जीते हैं, एक पैर छोटा होने पर भी ज्योति ने हिम्मत नहीं हारी और मेहनत से खेल की दुनिया में प्रदर्शन जारी रखा।

साहस
अजय राज, उत्तर प्रदेश : नौ साल के अजय राज के पिता को मारमख्ख ने पकड़ लिया था, अजय ने हिम्मत नहीं हारी और एक लकड़ी का सहारा लेकर मगरमछ पर वार किए, अजय ने साहस से अपने पिता की जान बचाई

मोहम्मद सिदान, केरल : पलक्कड़ के रहने वाले 11 वर्षीय सिदान के दो दोस्त करंट की चपेट में आ गए थे, सिदान ने सूझबूझ दिखाते हुए लकड़ी की मदद से अपने दोनों दोस्तों को बचाया

कला-संस्कृति
एस्तेर लालदुहवमी हनामते, मिजोरम : नौ वर्षीय हमानते यू-ट्यूब स्टार हैं, उनके चैनल पर दो करोड़ से अधिक सब्सक्राइबर हैं।

सुमन सरकार, बंगाल : नदिया जिले के 16 वर्षीय सुमन तीन साल की उम्र से तबला वादन में हैं, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सुमन को 43 पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।

सामाजिक सेवा
वंश, चंडीगढ़ : 17 साल के वंश को सामाजिक सेवा के क्षेत्र में योगदान के लिए पुरस्कृत किया गया है, उन्हें 'परीक्षा पर चर्चा' कार्यक्रम में भाग लेने पर भी प्रशस्ति पत्र मिल चुका है।

विज्ञान-तकनीक
अर्णव महर्षि, महाराष्ट्र : 17 साल के अर्णव महर्षि को विज्ञान श्रेणी में बाल पुरस्कार मिला है, उन्होंने कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) आधारित एक सॉफ्टवेयर ऐप तैयार किया है, जिसे भारत सरकार की ओर से कॉपीराइट और पेटेंट भी कराया गया है।

पर्यावरण संरक्षण
पूजा, यूपी : बाराबंकी निवासी पूजा के पिता श्रमिक, मां सरकारी स्कूल में भोजनमाता हैं, पूजा ने एक ऐसी ब्रेशर मशीन बनाई है, जिससे धूल नहीं बनती है। यह मशीन वायु प्रदूषण रोकने में कारगर है

आयशी प्रीशा बोरा, असम : आयशी ने रद्दी कागज से पेंसिल बनाने वाली मशीन तैयार की। ग्रेवाटर को रिसाइकिल करने और उसे भूजल में बदलने वाली प्रणाली भी विकसित की है।

12 लाख लोग आए, 19 करोड़ की बिक्री

सरस मेला

जागरण संवाददाता, पटना : बिहार सरस मेला में खरीदारी के साथ लोग राज्य के मशहूर व्यंजनों का भी स्वाद ले रहे हैं। 14 दिनों में 19 करोड़ रुपये से अधिक का कारोबार हो चुका है, 12 लाख से अधिक लोग मेला में आ चुके हैं।

गुरुवार को मेला में रिकार्ड डेढ़ लाख से अधिक पहुंचे और दो करोड़ रुपये से अधिक का कारोबार हुआ। रिजर्व बैंक आफ इंडिया के स्टाल पर कटे-फटे व पुराने नोट भी बदले जा रहे हैं तो विकास प्रबंधन संस्थान (डीएमआइ), पटना के स्टाल पर मैनेजमेंट कोर्स में भविष्य की जानकारी दी जा रही है। बुजुर्गों एवं दिव्यांगजनों के लिए जीविका के सामाजिक विकास विद्या के द्वारा व्हील चेयर की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। मोतिहारी से आए धर्मा जी के स्टाल पर घर-कार्यालय आदि को स्वच्छ व खुशबूदार रखने की सामग्री और टिप्स दिए जा रहे हैं।

सरस मेला में मोतिहारी के स्टार्टअप धर्मा के उत्पाद के लिए ग्राहकों की भीड़। • जागरण

दीदी की रसोई समेत 50 स्टाल पर विभिन्न प्रदेशों के देशी व्यंजनों एवं मिठाइयों का स्वाद ले रहे हैं। सौ से अधिक स्टाल से हस्तशिल्प, कलाकृतियों, परिधान, गर्म कपड़े, रजाई, दोहरा, कंबल, चादर, कालीन, रग्स, टेराकोटा, सेरामिक, फर्नीचर, कृत्रिम फूल एवं गहने, सुगंधित इत्र, अगरबत्तियां, कश्मीरी फल, मडुआ, बाजरा, जौ आदि के आटा, आचार, पापड़, अडवरी, दनवरी, आयुर्वेदिक पापड़, मालभोग और कतरनी चूड़ा, गुड़, लड्डू आदि की मिल रहे हैं।

Dainik Jagaran Page No-III

सेवा क्षेत्र की मदद से निर्यात का बनेगा रिकार्ड

चालू वित्त वर्ष में 850 अरब डालर के नए उच्च स्तर को छू सकता है कुल निर्यात, चुनौतियां बरकरार

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : सेवा क्षेत्र के सहयोग से चालू वित्त वर्ष 2025-26 में कुल निर्यात 850 अरब डालर के नए स्तर को छू सकता है। अप्रैल से नवंबर के दौरान भारत 562 अरब डालर का निर्यात कर चुका है और चालू वित्त वर्ष समाप्त होने में अभी चार माह बाकी हैं। नए वित्त वर्ष 2026-27 में भारतीय निर्यात की रफ्तार और तेज हो सकती है। अगले साल चीन को छोड़कर दुनिया की सभी बड़ी अर्थव्यवस्था के साथ भारत का व्यापार समझौता संभव दिख रहा है। अमेरिका और यूरोपीय संघ (ईयू) के साथ व्यापार वार्ता अंतिम चरण में है तो कनाडा व रूस के साथ भी व्यापार समझौते को लेकर वार्ता शुरू हो चुकी है।

खास बात यह है कि निर्यात के मोर्चे पर सरकार के सामने नए साल में कई चुनौतियां भी दिख रही हैं। अगले साल एक जनवरी से यूरोपीय संघ कार्बन बार्डर एडजस्टमेंट मैकेनिज्म (सीबैम) लागू करने जा रहा है, जिससे यूरोपीय देशों को स्टील, एल्युमिनियम जैसे उत्पादों का निर्यात करना चुनौतीपूर्ण हो जाएगा। सीबैम के तहत वस्तुओं के उत्पादन में कार्बन उत्सर्जन के हिसाब से यूरोप अलग से टैक्स लगाएगा। इसके अलावा अमेरिका के साथ व्यापार समझौते में हो रही देरी भी चुनौती साबित हो सकती है। तमाम वैश्विक चुनौतियों और अमेरिका के 50 प्रतिशत शुल्क के बावजूद अप्रैल-नवंबर 2025 के दौरान निर्यात में पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि की तुलना में पांच प्रतिशत की बढ़ोतरी दिख रही है।

- चीन को छोड़ सभी बड़े देशों से व्यापार समझौते की संभावना से भी मिलेगा निर्यात को बल
- गुणवत्ता बढ़ाने के साथ निर्माण लागत में कमी से सप्लाई चेन में बढ़ाई जा सकती है भागीदारी

562 अरब डालर का भारत निर्यात कर चुका है अप्रैल से नवंबर 2025 के दौरान

400 अरब डालर को पार कर सकता है सेवा निर्यात चालू वित्त वर्ष में

1 ट्रिलियन डालर के निर्यात का लक्ष्य रखा है वाणिज्य विभाग ने 2030 तक

वस्तु निर्यात में कोई वृद्धि होने की उम्मीद नहीं

ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (जीटीआरआई) के संस्थापक अजय श्रीवास्तव के मुताबिक गत वित्त वर्ष 2024-25 में भारत ने वस्तु और सेवाओं को मिलाकर 825 अरब डालर का निर्यात किया था। इनमें 438 अरब डालर का वस्तु तो 387 अरब डालर का सेवा निर्यात शामिल था। हालांकि, चालू वित्त वर्ष में वस्तु निर्यात कमोवेश पिछले वित्त वर्ष के स्तर पर ही दिख रहा है। दूसरी तरफ चालू वित्त वर्ष में सेवा निर्यात पहली बार 400 अरब डालर को पार करने जा रहा है और उसकी मदद से ही कुल निर्यात 850 अरब डालर पर पहुंच जाएगा।

पिछले दो वर्षों में 20 से अधिक नए देशों को शुरू किया गया निर्यात

वाणिज्य विभाग ने वर्ष 2030 तक देश के निर्यात को एक ट्रिलियन डालर तक ले जाने का लक्ष्य रखा है। व्यापार समझौते की वजह से अगले साल कई बड़े देश के बाजार भारत के लिए शुल्क मुक्त हो जाएंगे, जिसकी मदद से 2030 तक एक ट्रिलियन डालर के निर्यात लक्ष्य को हासिल करने में मदद मिलेगी। श्रीवास्तव का कहना है कि निर्यात को बढ़ाने के लिए भारत को अपने उत्पादों की गुणवत्ता बढ़ाने के साथ निर्माण लागत में कमी करने की जरूरत है ताकि वैश्विक सप्लाई चेन में भागीदारी बढ़ाई जा सके। नए बाजार की तलाश शुरू हो गई है और पिछले दो साल में 20 से अधिक नए देशों में निर्यात शुरू हो चुका है।

Dainik Jagaran Page No-15

जेन जी पीढ़ी ही विकसित भारत के लक्ष्य तक लेकर जाएगी : मोदी

प्रधानमंत्री ने 'वीर बाल दिवस' के मौके पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यक्रम को संबोधित किया। उन्होंने कहा, आज की पीढ़ी भाग्यशाली है, उसकी प्रतिभा के साथ राष्ट्र खड़ा है। युवाओं के पास बहुत से विकल्प उपलब्ध हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शुक्रवार को नई दिल्ली में प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार 2025 के एक बाल विजेता से बातचीत करते हुए।

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 26 दिसंबर।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि नई पीढ़ी (जेन जी) ही देश को विकसित भारत के लक्ष्य तक लेकर जाएगी। मोदी ने युवाओं को कहा कि एक तरह से आप सभी ह्यजेन-जीह्न हैं और ह्यजेन-अल्फाह्न भी हैं। आपकी पीढ़ी ही भारत को विकसित भारत के लक्ष्य तक ले जाएगी। उन्होंने कहा कि उम्र से कोई छोटा या बड़ा नहीं होता। आप अपने कामों और उपलब्धियों से बड़े बनते हैं। आप कम उम्र में भी ऐसे काम कर सकते हैं कि बाकी लोग आपसे प्रेरणा लें। प्रधानमंत्री भारत मंडपम में 'वीर बाल दिवस' के मौके पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मोदी ने कहा कि आज की पीढ़ी भाग्यशाली है क्योंकि आज उनकी प्रतिभा के साथ राष्ट्र खड़ा हुआ है। पुरानी व्यवस्थाओं में ये माहौल बन गया था कि कुछ अच्छा हो ही नहीं सकता। चारों तरफ निराशा का वातावरण बना दिया गया था। लोगों को यहां तक लगने लगा कि मेहनत करके क्या फायदा है? लेकिन आज देश प्रतिभा को खोजता है, उन्हें मंच देता है, उनके सपनों के साथ 140 करोड़ देशवासियों की ताकत लग जाती है।

डिजिटल इंडिया की सफलता के कारण आपके पास इंटरनेट की ताकत है, आपके पास सीखने के लिए संसाधन है। जो साइंस, टेक या स्टार्टअप्स में आगे जाना चाहते हैं तो उनके लिए स्टार्टअप इंडिया मिशन है, ऐसे तमाम मंच आपको आगे बढ़ाने के लिए हैं। मोदी ने युवाओं से अपील की कि वे कम समय की (शार्ट टर्म पापुलैरिटी) चमक-धमक में न फंसे और अपनी सफलता को केवल अपने तक सीमित नहीं रखें। आपका लक्ष्य हो, आपकी सफलता देश की सफलता बने। उन्होंने कहा कि आज लाखों बच्चे अटल टिंकरिंग लैब्स के माध्यम से नवाचार और अनुसंधान में लगे हुए हैं। उन्होंने कहा कि आने वाले 25 वर्ष देश की दिशा तय करेंगे और स्वतंत्रता के बाद देश की क्षमताएं, आकांक्षाएं और विश्व की अपेक्षाएं एक रूप से प्रदर्शित हो रही हैं। आज युवा पहले से कही ज्यादा अवसरों के दौर में बड़े हो रहे हैं और सरकार उनकी प्रतिभा, आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता निखारने के लिए बेहतर अवसर प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

मोदी ने कहा कि आज हम उन वीर साहिबजादों को याद कर रहे हैं, जो हमारे भारत का गौरव हैं। जो भारत के अदम्य साहस, शौर्य, वीरता की पराकाष्ठा है। वो वीर साहिबजादे, जिन्होंने उम्र और अवस्था की सीमाओं को तोड़ दिया। जो क्रूर मुगल सल्तनत के सामने ऐसे चट्टान की तरह खड़े हुए कि मजहबी कट्टरता और आतंक का वजूद ही हिल गया। जिस राष्ट्र के पास ऐसा गौरवशाली अतीत हो, जिसकी युवा पीढ़ी को ऐसी प्रेरणाएं विरासत में मिली हों वो राष्ट्र क्या कुछ नहीं कर सकता। प्रधानमंत्री ने कहा कि वीर बाल दिवस का ये दिन भावना और श्रद्धा से भरा हुआ है।

राष्ट्रपति मुर्मू ने 20 बच्चों को सम्मानित किया

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 26 दिसंबर।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने नई दिल्ली में शुक्रवार को आयोजित एक समारोह में वीरता, सामाजिक सेवा, पर्यावरण, खेल, कला एवं संस्कृति तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में असाधारण उपलब्धियों के लिए 20 बच्चों को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित किया।

उन्होंने प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं को बधाई दी और कहा कि पुरस्कार विजेता बच्चों ने अपने परिवारों, समुदायों और पूरे देश को गौरवान्वित किया है। राष्ट्रपति मुर्मू ने विश्वास व्यक्त किया कि प्रोत्साहित किए जाने के मकसद से प्रदान किए गए यह पुरस्कार देश भर के सभी बच्चों को प्रेरित करेंगे। उन्होंने वीर बाल दिवस के महत्व के बारे में कहा कि लगभग 320 साल पहले, 10वें सिख गुरु, गुरु गोविंद सिंह जी और उनके चार पुत्रों ने सत्य एवं न्याय के समर्थन में लड़ते हुए 'सर्वोच्च बलिदान' दिए। वीर बाल दिवस 26 दिसंबर को मनाया जाता है।

उन्होंने कहा कि दो सबसे कम उम्र के साहिबजादों – बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह – की वीरता को भारत तथा विदेश दोनों जगह सम्मानित किया जाता है। राष्ट्रपति मुर्मू ने सत्य और न्याय के लिए गर्व से अपने प्राणों की आहुति देने वाले उन महान बाल नायकों को श्रद्धापूर्वक याद किया। राष्ट्रपति ने कहा कि किसी देश की महानता तभी निश्चित होती है जब उसके बच्चे देशभक्ति और उच्च आदर्शों से ओतप्रोत हों। उन्होंने कहा, ''सात वर्षीय वाका लक्ष्मी प्रग्निका जैसी प्रतिभाशाली बच्चियों की बदौलत ही भारत को विश्व स्तर पर शतरंज की महाशक्ति माना जाता है। अपनी बहादुरी और बुद्धिमत्ता से दूसरों की जान बचाने वाले अजय राज और मोहम्मद सिदान पी. हर तरह की प्रशंसा के पात्र हैं। उन्होंने कहा, नौ वर्षीय बेटी व्योमा प्रिया और 11 वर्षीय बहादुर बेटे कमलेश कुमार ने दूसरों की जान बचाते हुए अपनी जान गंवाई जबकि 10 वर्षीय श्रवण सिंह ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान युद्ध से जुड़े जोखिमों के बावजूद, अपने घर के पास सीमा पर तैनात भारतीय सैनिकों को नियमित रूप से पानी, दूध और लस्सी पहुंचाई। वहीं, दिव्यांग बेटी शिवानी होसुरू उप्पारा ने आर्थिक और शारीरिक सीमाओं को पार करते हुए खेल जगत में असाधारण उपलब्धियां हासिल की हैं।

सम्मान नई दिल्ली में वीर बाल दिवस के अवसर पर आयोजित एक समारोह के दौरान 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार' के विजेताओं के साथ राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू।

Jansatta Page No-8

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार' से 20 बच्चों को सम्मानित किया, प्रधानमंत्री बोले- भारत का भविष्य उज्ज्वल

जेन जी विकसित भारत के लक्ष्य तक पहुंचाएंगे: मोदी

वीर बाल दिवस

नई दिल्ली, विशेष संवाददाता/एजेंसी। वीर बाल दिवस पर देश के 20 नौनिहालों को साहसिक कृत्यों और खेल, विज्ञान, कला के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान पर 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार' दिए गए। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने शुक्रवार को ये पुरस्कार प्रदान किए। इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बच्चों से कहा कि वे बड़े सपने देखें और कड़ी मेहनत करें। पीएम ने कहा कि जेन जी और जेन अल्फा ही हमें विकसित भारत के लक्ष्य तक ले जाएंगे।

पुरस्कार पाने वालों में 14 साल के क्रिकेटर वैभव सूर्यवंशी भी इनमें शामिल हैं। 20 बच्चों में से दो को मरणोपरांत पुरस्कार दिया गया। शुक्रवार को नई दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में आयोजित समारोह में राष्ट्रपति मुर्मु ने विजेता बच्चों को बधाई देते हुए कहा कि उन्होंने अपने परिवारों, अपने समुदायों और पूरे देश को गौरवान्वित किया है। उन्होंने उम्मीद जताई कि पुरस्कार पाने वाले बच्चों से देश के अन्य सभी बच्चे प्रेरित होंगे। इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी विजेता बच्चों से मुलाकात की और उन्हें संबोधित किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि जेन जी और जेन अल्फा ही हमें विकसित भारत के लक्ष्य तक ले जाएंगे।

पीएम मोदी ने कहा, भारत का भविष्य उसके बच्चों और युवाओं के भविष्य से ही उज्जवल होगा। उनका साहस, उनकी प्रतिभा और उनका समर्पण राष्ट्र की प्रगति को दिशा देगा। इसी विश्वास के साथ, इसी जिम्मेदारी के साथ और इसी निरंतर गति के साथ भारत अपने भविष्य की ओर आगे बढ़ता रहेगा।'

रटने के बजाय सोचने पर जोर दें: मोदी ने कहा, आज फोकस प्रैक्टिकल लर्निंग पर है। बच्चों में रटने के बजाए, सोचने की आदत विकसित हो। उनमें सवाल पूछने का साहस और समाधान खोजने की क्षमताएं विकसित हों। इसके लिए पहली बार इस दिशा में प्रयास हो रहे हैं। हर सेक्टर में युवाओं के लिए नए अवसर खुल रहे हैं। आज भारत के सामने परिस्थितियां अभूतपूर्व हैं। आज भारत दुनिया के सबसे युवा देशों में से एक है। आने वाले 25 वर्ष भारत की दिशा तय करने वाले हैं। पीएम ने कहा, आज का युवा ऐसे समय में बड़ा हो रहा है, जब अवसर पहले से कहीं ज्यादा हैं। विकसित भारत की मजबूत नींव के लिए भारत की एजुकेशन पॉलिसी में भी अहम सुधार किए गए हैं।

आपकी सफलता देश की सफलता बने: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि पहले युवा सपने देखने से भी डरते थे, क्योंकि पुरानी व्यवस्थाओं में यह माहौल बन गया था कि कुछ अच्छा हो ही नहीं सकता। चारों तरफ निराशा का वातावरण बना दिया गया था। लोगों को लगने लगा था कि मेहनत करके क्या फायदा है। लेकिन आज देश प्रतिभा को खोजता है। उन्हें मंच देता है। उनके सपनों के साथ 140 करोड़ देशवासियों की ताकत लग जाती है। पीएम मोदी ने कहा, डिजिटल इंडिया की सफलता के कारण आपके पास इंटरनेट की ताकत है। आपके पास सीखने के संसाधन हैं। जो साइंस, टेक और स्टार्टअप में जाना चाहते हैं, उनके लिए स्टार्टअप इंडिया जैसे मिशन हैं। जो बच्चे या युवा स्पोर्ट्स में आगे बढ़ रहे हैं, उनके लिए खेलो इंडिया मिशन है।

आज देश प्रतिभा को खोजता है: पीएम ने कहा कि पहले युवा सपने देखने से भी डरते थे, लेकिन आज देश प्रतिभा को खोजता है। उन्हें मंच देता है। उनके सपनों के साथ 140 करोड़ देशवासियों की ताकत लग जाती है। पीएम मोदी ने कहा, डिजिटल इंडिया की सफलता के कारण आपके पास इंटरनेट की ताकत है। आपके पास सीखने के संसाधन हैं।

यह पीढ़ी विकसित भारत के लक्ष्य की तरफ ले जाएगी: मोदी ने कहा, यहां मेरा युवा भारत है। संगठन से जुड़े इतने सारे युवा यहां एकत्रित हैं। एक तरह से आप सभी जेन जी हैं, जेल अल्फा भी हैं। आपकी पीढ़ी ही भारत को विकसित भारत के लक्ष्य की तरफ ले जाएगी। मैं जेन-जी की योग्यता और आत्मविश्वास देखता हूं, समझता हूं। इसलिए आप पर बहुत भरोसा करता हूं। मोदी ने कहा, हमारे यहां कहा गया है- बालादपि ग्रहीतव्यं विद्या युक्तमुक्तं मनीषिभिः, अमृतं विषसंयुक्तं यदुक्तं तदपि त्यजेत्.. अर्थात, अगर छोटा बच्चा भी कोई बुद्धिमानी की बात करे तो उसे ग्रहण करना चाहिए। यानी उम्र से कोई छोटा नहीं होता और कोई बड़ा भी नहीं होता। आप बड़े बनते हैं अपने कामों और उपलब्धियों से।

नई दिल्ली में शुक्रवार को 'वीर बाल दिवस' के मौके पर आयोजित कार्यक्रम में 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार' विजेताओं के साथ पीएम नरेंद्र मोदी। इस दौरान वह पुरस्कार पाने वाले क्रिकेटर वैभव सूर्यवंशी से भी मिले और उनकी सराहना की। • प्रेट्र

नई दिल्ली में शुक्रवार को 'वीर बाल दिवस' के मौके पर आयोजित कार्यक्रम में बिहार के कमलेश (मरणोपरांत) को मिला सम्मान ग्रहण करते उनके पिता दुखी शाह।

02 बच्चों को मरणोपरांत बाल पुरस्कार से सम्मानित किया गया

18 राज्यों से किया गया है पुरस्कार के लिए बच्चों का चयन

"पुरस्कार पाने वाले बच्चों से देश के सभी बच्चे प्रेरित होंगे। उन्होंने अपने परिवारों, अपने समुदायों और पूरे देश को गौरवान्वित किया है
–द्रौपदी मुर्मु, राष्ट्रपति

"'मैं भारत के युवाओं से यही अपेक्षा करता हूं कि बड़े सपने देखें, कड़ी मेहनत करें और अपने आत्मविश्वास को भी भी कमजोर न पड़ने दें।
–नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

श्रवण ने जंग में सैनिकों को मदद दी

फिरोजपुर पंजाब के रहने वाले दस वर्षीय श्रवण सिंह को 'ऑपरेशन सिंदूर' में सैनिकों की मदद के लिए राष्ट्रीय बाल पुरस्कार दिया गया। श्रवण ने पाक के खिलाफ अभियान में गांव में जवानों के लिए दूध, चाय, छाछ, बर्फ ले जाया करते थे।

संघर्ष से राष्ट्रीय सम्मान तक पहुंची अनुष्का

रांची। गांव की पगडंडियों से देश के सबसे बड़े सम्मान तक पहुंचना आसान नहीं होता। संसाधनों की कमी और भविष्य की अनिश्चितता के बीच अगर कोई अपने सपनों को थामे रखे और उन्हें साकार कर दिखाए, तो वह सिर्फ खिलाड़ी नहीं, प्रेरणा बन जाती है। झारखंड की 14 वर्षीया फुटबॉलर अनुष्का ऐसी ही प्रेरणा का नाम है। शुक्रवार को उन्हें राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इनको मिला सम्मान

खेल

वैभव सूर्यवंशी, बिहार : 14 वर्षीय वैभव विस्फोटक बल्लेबाज के रूप में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तेजी से उभर रहे हैं, गत एक वर्ष में वैभव ने हर फॉर्मेट में जबरदस्त बल्लेबाजी से दुनियाभर के क्रिकेट प्रेमियों के दिलों में जगह बनाई है

वाका लक्ष्मी प्रज्ञिका, गुजरात : सूरत निवासी सात वर्षीय प्रज्ञिका 2025 में 'फिडे वर्ल्ड स्कूल चेस चैंपियनशिप' में अंडर-7 बालिका श्रेणी में विश्व चैंपियन बनीं, स्पर्धा के दौरान सभी नौ मुकाबले जीतकर स्वर्ण पदक हासिल किया

अनुष्का, झारखंड : 14 वर्षीय फुटबॉलर अनुष्का को अंडर-17 महिला फुटबॉल टीम में शामिल किया गया है, उनकी मां दिहाड़ी श्रमिक हैं जबकि पिता बीमार रहते हैं, बावजूद अनुष्का ने खेल के प्रति अपना रुझान बनाए रखा

ज्योति, हरियाणा : सिरसा की ज्योति पैरा एथलीट हैं, उन्होंने शॉटपुट, भाला व डिस्कस थ्रो में कई राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय पदक जीते हैं, एक पैर छोटा होने पर भी ज्योति ने हिम्मत नहीं हारी और मेहनत से खेल की दुनिया में प्रदर्शन जारी रखा।

साहस

अजय राज, उत्तर प्रदेश : नौ साल के अजय राज के पिता को मगरमच्छ ने पकड़ लिया था, अजय ने हिम्मत नहीं हारी और एक लकड़ी का सहारा लेकर मगरमच्छ पर वार किए, अजय ने साहस से अपने पिता की जान बचाई

मोहम्मद सिदान, केरल : पलक्कड़ के रहने वाले 11 वर्षीय सिदान के दो दोस्त करंट की चपेट में आ गए थे, सिदान ने सूझबूझ दिखाते हुए लकड़ी की मदद से अपने दोनों दोस्तों को बचाया

कला-संस्कृति

एस्तेर लालदुहावमी हनामते, मिजोरम : नौ वर्षीय हमानते यू-ट्यूब स्टार हैं, उनके चैनल पर दो करोड़ से अधिक सब्सक्राइबर हैं।

सुमन सरकार, बंगाल : नदिया जिले के 16 वर्षीय सुमन तीन साल की उम्र से तबला वादन में हैं, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सुमन को 43 पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।

सामाजिक सेवा

वंश, चंडीगढ़ : 17 साल के वंश को सामाजिक सेवा के क्षेत्र में योगदान के लिए पुरस्कृत किया गया है, उन्हें 'परीक्षा पर चर्चा' कार्यक्रम में भाग लेने पर भी प्रशस्ति पत्र मिल चुका है।

विज्ञान-तकनीक

अर्णव महर्षि, महाराष्ट्र : 17 साल के अर्णव महर्षि को विज्ञान श्रेणी में बाल पुरस्कार मिला है, उन्होंने कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) आधारित एक सॉफ्टवेयर ऐप तैयार किया है, जिसे भारत सरकार की ओर से कॉपीराइट और पेटेंट भी कराया गया है।

पर्यावरण संरक्षण

पूजा, यूपी : बाराबंकी निवासी पूजा के पिता श्रमिक, मां सरकारी स्कूल में भोजनमाता हैं, पूजा ने एक ऐसी थ्रेशर मशीन बनाई है, जिससे धूल नहीं बनती है। यह मशीन वायु प्रदूषण रोकने में कारगर है

आयशी प्रीशा बोरा, असम : आयशी ने रद्दी कागज से पेंसिल बनाने वाली मशीन तैयार की। ग्रेवाटर को रिसाइकिल करने और उसे भूजल में बदलने वाली प्रणाली भी विकसित की है।

Hindustan Page No-21

पश्चिमी विक्षोभ के कारण दिल्ली में कोहरे की संभावना

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 26 दिसंबर।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आइएमडी) ने 27 और 28 दिसंबर को दिल्ली में मध्यम कोहरे की संभावना जताते हुए 'पीली चेतावनी' जारी की है। विभाग के अनुसार, नए पश्चिमी विक्षोभ के सक्रिय होने से आसमान पर पूरे दिन कोहरा छाया रहेगा और तापमान में 2-3 डिग्री की गिरावट आएगी, जिससे ठंड बढ़ेगी।

आइएमडी के अनुमान के अनुसार, 27 दिसंबर को अधिकतम तापमान 21-23 डिग्री और न्यूनतम तापमान 6-8 डिग्री के बीच रहेगा। दोपहर में हवाओं की गति 10-15 किलोमीटर प्रति घंटा होगी, जो शाम के समय घटकर 0-5 किलोमीटर प्रति घंटा हो जाएगी। इससे 28 दिसंबर को कोहरा और गहरा होगा और दृश्यता प्रभावित होगी। 28 दिसंबर को अधिकतम तापमान 21-23 डिग्री और न्यूनतम 5-7 डिग्री रहने का अनुमान है। दोपहर बाद हवा की गति 10-15 किलोमीटर प्रति घंटा तक बढ़ जाएगी, जबकि रात में यह 5-10 किलोमीटर प्रति घंटा रह सकती है।

शुक्रवार, 26 दिसंबर को दिल्ली में आंशिक बादल और हल्का कोहरा देखा गया। अधिकतम तापमान 22.3 डिग्री और न्यूनतम 7.7 डिग्री दर्ज किया गया। हवाओं की औसत गति 5-10 किलोमीटर प्रति घंटा और अधिकतम 13 किलोमीटर प्रति घंटा रही।

पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने नागरिकों से अपील की है कि वायु गुणवत्ता में अस्थायी सुधार के बाद भी प्रदूषण नियंत्रण उपायों का पालन जारी रखें। उन्होंने चेताया कि पश्चिमी विक्षोभ के कारण मौसम बिगड़ सकता है, घनी धुंध और कोहरे की आशंका बढ़ सकती है और प्रदूषण स्तर फिर बढ़ सकता है।

Jansatta Page No-3

गंभीर समस्या

श्वसन विशेषज्ञों ने दी चेतावनी

कोविड के बाद प्रदूषण सबसे बड़ा स्वास्थ्य संकट

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 26 दिसंबर।

राष्ट्रीय राजधानी समेत देश के अधिकांश महानगरों की खराब हो रही आबोहवा के बीच स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने कहा है कि कोविड-19 महामारी के बाद भारत जिस सबसे बड़े स्वास्थ्य संकट का सामना कर रहा है, वह वायु प्रदूषण है।

ब्रिटेन में रहने वाले भारतीय मूल के श्वसन रोग विशेषज्ञ ने चेतावनी दी है कि यदि तुरंत ठोस कदम नहीं उठाए गए तो हालात साल दर साल और बिगड़ेंगे। विशेषज्ञों ने कहा कि देश में श्वसन संबंधी बीमारियों का एक बड़ा संकट धीरे-धीरे विकराल रूप ले रहा है, जो अभी न तो बड़े पैमाने पर पहचाना गया है और न ही इसके समाधान के लिए पर्याप्त कदम उठाए जा रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र (यूएन) की वायु प्रदूषण पर रपटें लगातार यह बताती हैं कि वायु प्रदूषण स्वास्थ्य के लिए एक बड़ा खतरा है, जिससे हर साल लाखों लोग मरते हैं, खासकर बच्चे, और विश्व के देशों के मौजूदा कानून अक्सर अपर्याप्त होते हैं।

केंद्र सरकार की विभिन्न रपट में भी कहा गया है कि वायु प्रदूषण भारत के लिए एक गंभीर स्वास्थ्य और आर्थिक समस्या है। वर्ष 2025 में आई लैंसेट रपट के मुताबिक, वर्ष 2022 में भारत में प्रदूषण से करीब 17 लाख लोगों की मौत हुई। जिसमें 7.5 लाख मौतें जीवाश्म ईंधन के कारण थीं।

भारत दुनिया के सबसे प्रदूषित देशों में से एक है, जहां हवा में जहरीले तत्व विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानकों से काफी ऊपर हैं। केंद्रीय परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने गत मंगलवार को स्वीकार किया कि दिल्ली में लगभग 40 प्रतिशत प्रदूषण परिवहन क्षेत्र से आता है, जो मुख्य रूप से जीवाश्म ईंधन पर निर्भर है।

ब्रिटेन में कार्यरत कई वरिष्ठ चिकित्सकों ने कहा कि सांस संबंधी बीमारियों का यह छिपा हुआ संकट धीरे-धीरे गंभीर **बाकी पेज 8 पर**

Jansatta Page No-1

गंगा के उत्तरी क्षेत्र के तीन व दक्षिणी क्षेत्र के पांच एयरशेड बढ़ा रहे वायु प्रदूषण

अखिलेश तिवारी • जागरण

कानपुर : बिहार में पांच ऐसे क्षेत्र हैं जो पूरे राज्य में वायु गुणवत्ता की स्थितियों को गंभीर बना रहे हैं। इसमें गंगा के उत्तरी क्षेत्र में तीन और दक्षिणी क्षेत्र में दो इलाके हैं। आइआइटी कानपुर ने बिहार में वायु गुणवत्ता यानी प्रदूषण की स्थितियों का सेंसर आधारित डाटा तैयार किया है, इसके अनुसार उत्तर बिहार के 21 और दक्षिण बिहार 16 जिलों के ऊपर प्रदूषित हवा के घने बादल बने हैं जो लगभग पूरे साल बिहार की हवा को खराब बनाए रखते हैं। इन क्षेत्रों में वायु प्रदूषण के कारकों को पहचान कर पूरे राज्य की हवा को साफ-सुथरी बनाया जा सकता है। आइआइटी ने बच्चाव का एक रोडमैप भी बिहार सरकार के साथ साझा किया है। इस रिपोर्ट को अंतरराष्ट्रीय जर्नल एनवायरमेंटल साइंस एंड टेक्नोलाजी में प्रकाशित किया गया है।

शहरों में वायु गुणवत्ता जांचने के उपाय पहले से लागू हैं लेकिन पहली बार देश में किसी राज्य की वायु गुणवत्ता का आकलन किया गया। आइआइटी कानपुर के प्रो. सच्चिदानंद त्रिपाठी के नेतृत्व में ग्रामीण क्षेत्रों में परिवेशी वायु गुणवत्ता निगरानी (अमृत) परियोजना संचालित की जा रही है। इसके तहत अत्याधुनिक सेंसर परिवेशी वायु गुणवत्ता निगरानी नेटवर्क (एसएएक्यूएम) लागू किया गया है। इसमें स्वदेशी तकनीक का उपयोग कर राज्य के सभी विकासखंडों में 538 सेंसर लगाए हैं। जिनसे हर पल की वायु गुणवत्ता का डाटा जुटाया जा रहा है। मशीन लर्निंग और एआइ माडल का प्रयोग कर आइआइटी की टीम ने पूरे बिहार में पांच ऐसे एयरशेड की पहचान की है जहां वायु गुणवत्ता सबसे ज्यादा खराब है। इसमें उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र जो मुजफ्फरपुर से सटा है। यहां की हालत सबसे बदतर है। लगभग 90 प्रतिशत दिनों में लोग

अस्वास्थ्यकर हवा में सांस लेते हैं। इस इलाके में कुल वार्षिक उत्सर्जन राज्य के अंदर तुलना में ज्यादा है। इस इलाके में ईंट भट्ठा इंडस्ट्री (1900), चीनी मिलें (9) और मुजफ्फरपुर जिले में कांटी थर्मल पावर स्टेशन की मौजूदगी को वायु प्रदूषण का बड़ा कारण माना जाता है। वायोमास का जलना और प्री-मानसून के दौरान पश्चिमी चंपारण और गोपालगंज जिलों में जंगल में लगने वाली तेज आग भी पीएम 2.5 प्रदूषण के लिए जिम्मेदार हो सकती है।

प्री मानसून स्थितियां

जिले	पीएम 2.5 की मात्रा प्रति वर्गमीटर
गोपालगंज	74
पश्चिमी चंपारण	70
वैशाली	52

बिहार सरकार के सहयोग से अमृत परियोजना पर काम किया गया और पहली बार पूरे राज्य में वायु गुणवत्ता की पहचान हुई है। इस रिपोर्ट की मदद से वायु प्रदूषण के कारणों की पहचान कर समाधान किया जा सकेगा। यह रिपोर्ट राज्य सरकार को दी गई है।

- प्रो.सच्चिदानंद त्रिपाठी, डीन कोटक स्कूल आफ सस्टेनेबिलिटी, आइआइटी कानपुर

आइआइटी कानपुर के अध्ययन की मुख्य बातें

एयरशेड एक : उत्तर-पश्चिमी बिहार के नौ जिले शामिल हैं। कुल 23,939 वर्ग किमी का एरिया। मानसून के बाद और सर्दी के मौसम में पीएम 2.5 का औसत क्रमशः 165 और 210 माइक्रोग्राम प्रति वर्गमीटर था। मानसून बाद शिवहर और गोपालगंज में (175 माइक्रोग्राम) सर्वाधिक है। सर्दी में, मुजफ्फरपुर और शिवहर जिलों में पीएम 2.5 सबसे ज्यादा 230 माइक्रोग्राम प्रति वर्गमीटर होता है, जबकि सीवान में (190 माइक्रोग्राम) सबसे कम होता है।

एयरशेड 2 : आठ जिलों में कुल एरिया 17,997 वर्गमी.है। सबसे ज्यादा औसत पीएम 2.5 घनत्व सर्दी के मौसम में (187 माइक्रोग्राम प्रति वर्गमीटर) पाया गया, इसके बाद पोस्ट-मानसून (131) और प्री-मानसून (54) रहा है। पोस्ट मानसून में पीएम 2.5 का स्तर समस्तीपुर (152), सर्दी के दौरान मधेपुरा और दरभंगा (220) और प्री मानसून के दौरान खगड़िया और मधुबनी (65) में ज्यादा था। सबसे कम घनत्व पोस्ट मानसून के दौरान खगड़िया (115) का रहा।

एयरशेड 3 : उत्तर पूर्वी बिहार। यह सबसे छोटा एयरशेड है, जिसका क्षेत्रफल 11,039 वर्ग किमी है। इसमें चार जिले किशनगंज, अररिया, पूर्णिया और कटिहार हैं। इसमें पीएम 2.5 का घनत्व सर्दी के दौरान (176) पोस्ट मानसून (105) और प्री मानसून में (66) था। इसके अलावा, पोस्ट मानसून, सर्दियों और प्री मानसून मौसमों के दौरान जिलेवार विश्लेषण से पता चलता है कि कटिहार (118), अररिया (201), और किशनगंज (83) में ज्यादा घनत्व है।

एयरशेड 4 : दक्षिण-पश्चिमी बिहार। 21,152 वर्ग किमी में आठ प्रशासनिक जिले शामिल हैं। पोस्ट मानसून के दौरान मौसमी औसत पीएम 2.5 घनत्व 110 माइक्रोग्राम प्रति वर्गमीटर रहा है। सर्दी में 160 और प्री मानसून में 48 थी, जबकि पूरे एयरशेड में यह 106 माइक्रोग्राम प्रति वर्गमीटर पीएम 2.5 रहा है। बक्सर में पोस्ट मानसून (124), सर्दी में (173) और प्री मानसून (63) का स्तर रहा है।

एयरशेड 5 : दक्षिण-पूर्वी बिहार। आठ प्रशासनिक जिले शामिल हैं। कुल क्षेत्रफल 16,850 वर्ग किमी है। सर्दी में सबसे अधिक पीएम 2.5- 144 माइक्रोग्राम प्रति वर्गमीटर था। मानसून के बाद (98) और मानसून से पहले (44) का स्तर था। नालंदा जिले (मानसून के बाद 112 और सर्दियों में 173) का घनत्व था। मानसून के बाद शेखपुरा (102) और सर्दियों में भागलपुर (156) रहा है।

Dainik Jagaran Page No-9

शोध को आसान बनाएगा 'परम रुद्र'

आइआइटी पटना में परम रुद्र सुपर कंप्यूटर का शुभारंभ, 39 पेटाफ्लाप्स है कुल कंप्यूट क्षमता

उपलब्धि

- देश के 12 हजार से अधिक शोधकर्ता कर रहे प्रयोग, जटिल कम्प्यूटिंग कार्य करने में सुविधा
- प्रणाली के निर्माण में प्रयुक्त अधिकांश घटकों का निर्माण और संयोजन देश में ही हुआ है

आइआइटी पटना में परम रुद्र सुपरकंप्यूटर के शुभारंभ के अवसर पर उपस्थित इलेक्ट्रानिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव अमितेश कुमार सिन्हा, आइआइटी पटना के निदेशक प्रो. टीएन सिंह व अन्य। ● सौ: आइआइटी।

जागरण संवाददाता पटना: आइआइटी पटना में स्थापित अत्याधुनिक सुपरकंप्यूटर परम रुद्र का शुक्रवार को शुभारंभ किया गया। राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन (एनएसएम) के अंतर्गत स्थापित परम रुद्र की शुरुआत पर इलेक्ट्रानिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव अमितेश कुमार सिन्हा, आइआइटी पटना के निदेशक प्रो. टीएन सिंह, समन्वयक प्रो. सोमनाथ त्रिपाठी, नवीन कुमार और डा. चितरंजन सिंह मौजूद रहे।

अमितेश कुमार सिन्हा ने कहा कि "राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन के अंतर्गत देशभर में अब तक 37 सुपर कंप्यूटर स्थापित किए जा चुके हैं, जिनकी कुल कंप्यूट क्षमता 39 पेटाफ्लाप्स है। जिनका उपयोग देश के 12 हजार से अधिक शोधकर्ता कर रहे हैं। शीघ्र ही विभिन्न शैक्षणिक एवं अनुसंधान संस्थानों में 10 और सुपरकंप्यूटिंग प्रणालियां स्थापित की जाएंगी, जिससे कुल कंप्यूट क्षमता 100 से अधिक पेटाफ्लाप्स हो जाएगी। देश में सुपरकंप्यूटिंग इकोसिस्टम के निर्माण के लिए स्वदेशी सुपरकंप्यूटिंग तकनीकों जैसे एचपीसी प्रोसेसर, सर्वर, कूलिंग तकनीक, इंटरकनेक्ट, साफ्टवेयर स्टैक और स्टोरेज का विकास किया जा रहा है, जिससे डिजाइन, विकास और विनिर्माण क्षमताओं को सुदृढ़ किया जा सके। उन्होंने यह बताया कि राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन, इलेक्ट्रानिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय भारत सरकार और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की यह संयुक्त पहल है।

प्रो. टीएन सिंह ने कहा कि यह एक ऐतिहासिक उपलब्धि है और हम सभी के लिए अत्यंत हर्ष का विषय है। इससे बिहार और पूर्वांचल में क्रांतिकारी परिवर्तन आएगा तथा छात्रों, शिक्षकों और शोधकर्ताओं को विभिन्न क्षेत्रों में जटिल कम्प्यूटिंग कार्यों को करने में बड़ी सुविधा मिलेगी। परम रुद्र सुपरकंप्यूटिंग सुविधा एनएसएम के अंतर्गत स्थापित की गई है, जिसमें इस प्रणाली के निर्माण में प्रयुक्त अधिकांश घटकों का निर्माण और संयोजन देश में ही किया गया है। साथ ही, मेक इन इंडिया पहल के अनुरूप सी-डैक द्वारा विकसित स्वदेशी साफ्टवेयर स्टैक का उपयोग किया गया है। इस 838 टेराफ्लाप्स सुपरकंप्यूटिंग सुविधा की स्थापना हेतु आइआइटी पटना और उन्नत संगणन विकास केंद्र के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। एनएसएम के दिशा-निर्देशों के अनुसार इस सुपरकंप्यूटर की कुल कंप्यूट क्षमता का एक हिस्सा निकटवर्ती शैक्षणिक एवं अनुसंधान संस्थानों के साथ भी साझा किया जाएगा। कुल मिलाकर, यह सुपरकंप्यूटिंग सुविधा भारतीय शैक्षणिक संस्थानों और उद्योगों में अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों को एक नई गति प्रदान करेगी और वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगी।

पेटाफ्लाप्स क्या है: पेटाफ्लाप्स प्रोसेसिंग गति का विशाल मापक है। प्रति सेकंड फ्लोटिंग प्वाइंट आपरेशन (फ्लाप्स) सुपरकंप्यूटर की प्रदर्शन क्षमता को मापने की इकाई है। सामान्य कंप्यूटर के प्रोसेसर की कार्यक्षमता को मेगाहट्र्ज इकाइयों में मापकर उसकी क्लाक स्पीड की गणना की जाती है।

Dainik Jagaran Page No-4

निसार : पृथ्वी की निगरानी हुई आसान

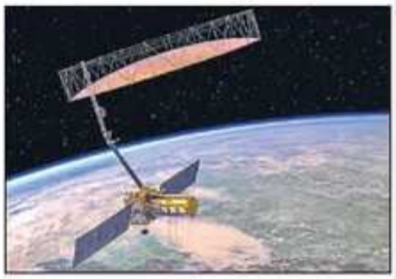

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) और अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने संयुक्त रूप से इस मिशन को 30 जुलाई को श्रीहरिकोटा से प्रक्षेपित किया था। निसार मिशन पृथ्वी पर भूमि परिवर्तनों की निगरानी के लिये प्रत्येक 12 दिनों में हाई-रिजॉल्यूशन डाटा मुहैया कराएगा। यह भूकंप, भूस्खलन और ज्वालामुखी गतिविधि के कारण होने वाली भूमि विकृति पर नजर रखेगा। उपग्रह फसल विस्तार और विकास चक्र जैसे कृषि पैटर्न की निगरानी करता है तथा मौसमी और जलवायु परिवर्तनों के कारण आर्द्रभूमि में होने वाले परिवर्तनों का आकलन करता है। आर्कटिक और अंटार्कटिक क्षेत्रों में ग्लेशियर और समुद्री बर्फ के पिघलने सहित क्रायोस्फीयर गतिशीलता का अध्ययन होगा। उपग्रह ने उच्च गुणवत्ता वाली तस्वीरें खींची थीं।

Hindustan Page No-21

अलबर्ट एक्का की असाधारण वीरता की गवाह बनी गंगासागर की लड़ाई

अलबर्ट एक्का का जन्म 1942 में आज ही झारखंड के गुमला जिले में हुआ था। 1962 में गाइर्स ब्रिगेड की 14वीं बटालियन में भर्ती हुए। ट्रेनिंग के ही दौरान ही उन्हें लांस नायक बना दिया गया। 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान उनकी बटालियन को गंगासागर में मजबूत पाकिस्तानी चौकियों पर कब्जा करने का काम सौंपा गया। यह ढाका जाने वाले एक प्रमुख रेलवे मार्ग पर स्थित था। तीन दिसंबर को 14 गाइर्स ने दुश्मन की चौकियों पर हमला किया। इस दौरान गंभीर रूप से घायल होने के बाद भी एक्का ने दो बंकरों में दुश्मन सैनिकों पर अकेले हमला करके कंपनी की जीत सुनिश्चित की और स्वयं बलिदान हो गए। मरणोपरांत उन्हें परमवीर चक्र मिला।

Dainik Jagaran Page No-18

न्यूट्रान तारे में विस्फोट से सबसे चमकीली खगोलीय घटना दर्ज की गई

2004 में आज ही न्यूट्रान तारा मैग्नेटर एसजीआर 1806-20 पर हुए एक विस्फोट से निकलने वाला विकिरण पृथ्वी तक पहुंचा था। यह अब तक दर्ज की गई सबसे चमकीली खगोलीय घटना थी। प्रकाश की इतनी तीव्र चमक थी कि वह चंद्रमा से टकराकर पृथ्वी के वायुमंडल को रोशन कर गई।

Dainik Jagaran Page No-18

29 देशों ने मिलकर की अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की स्थापना

1945 में आज ही 29 देशों ने एक समझौते पर हस्ताक्षर कर अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की स्थापना की थी। द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के साथ ही राष्ट्रों को अंतरराष्ट्रीय मुद्रा प्रणाली के पुनर्गठन और पुनर्स्थिरीकरण के लिए इसकी आवश्यकता महसूस हुई।

Dainik Jagaran Page No-18

क्या आप जानते हैं

पहली बार चांद का चक्कर लगाकर लौटे थे एस्ट्रोनॉट

27 दिसंबर 1968 को 'अपोलो 8' मिशन छह दिनों की यात्रा के बाद सुरक्षित रूप से पृथ्वी पर वापस लौट आया था

- यह इंसानों को चांद तक ले जाने वाला दुनिया का पहला मिशन था, जिसने चांद के चारों ओर चक्कर (ऑर्बिट) लगाए थे
- मिशन की शुरुआत 21 दिसंबर को फ्लोरिडा से हुई, जब तीन अंतरिक्ष यात्रियों (एस्ट्रोनॉट) को 'सैटर्न 5' रॉकेट में बैठकर रवाना किया गया
- अंतरिक्ष यात्रियों ने पहली बार अंतरिक्ष से पृथ्वी की पूरी तस्वीर खींची और चांद की सतह की बेहद करीब से वीडियो फुटेज भेजी
- इस मिशन की सफलता ने साबित किया कि इंसान चांद तक जा सकता है और वापस लौट सकता है
- अपोलो 8 की इस सफलता के ठीक एक साल बाद (20 जुलाई) नील आर्मस्ट्रांग ने चांद पर अपना पहला कदम रखा था

Hindustan Page No-22

बिहार सहित चार राज्यों में नमूना एकत्र कर रही वन्यजीव संस्थान की टीम

गंगा की सहायक नदियों की स्वच्छता का अध्ययन

विशेष

■ मनीष कुमार भारतीय

गोपालगंज। नमामि गंगे परियोजना के तहत गंगा और उसकी सहायक नदियों के जल और मिट्टी की स्वच्छता का अध्ययन कराया जा रहा है। इन नदियों की मिट्टी और पानी में प्रदूषण के स्तर की पड़ताल की जा रही है। यह देखा जा रहा है कि यह जलीय जीव, वनस्पतियों और मानव जीवन के लिए कितना हानिकारक है। इसके लिए देहरादून के भारतीय वन्यजीव संस्थान की पांच टीमें बिहार सहित उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और राजस्थान में मिट्टी और नदियों के जल के नमूने एकत्रित कर रही है।

बिहार में गंडक के अलावा सोन, कोसी, पुनपुन और गंगा में गिरने वाली सभी सहायक नदियों से नमूने एकत्र कर रही है। टीम के दो सदस्यों ने गोपालगंज में गंडक नदी से नमूने लिए हैं। पिछले दो दिनों में बिहार में कार्य कर रही टीम पश्चिमी चंपारण के बगहा, वाल्मीकि नगर तथा गोपालगंज के मंगलपुर और डुमरियाघाट में गंडक नदी से नमूने एकत्र कर चुकी है। टीम आगे रेवाघाट, सोनपुर, सिमरिया घाट सहित अन्य स्थानों से भी नमूने एकत्र करेगी। देहरादून स्थित भारतीय वन्यजीव संस्थान की डीन डॉ. रुचि बडोला ने बताया कि आगामी मार्च तक विभिन्न राज्यों से एकत्र किए गए नमूनों की जांच कर रिपोर्ट जारी की जाएगी। इन नमूनों की जांच के बाद प्रदूषण के स्तर के आधार पर जल की स्वच्छता को लेकर कार्ययोजना बनेगी। इसका उद्देश्य नदियों के जल को निर्मल बनाना है। जांच में नदियों के पानी का पीएच मान, घुलित ऑक्सीजन, आर्सेनिक, शीशा, पारा, कैडमियम की स्थिति के साथ मिट्टी में मिले रासायनिक तत्वों की मात्रा का आकलन होगा। इसके अलावा राप्ती, सरयू, यमुना, गोमती, अलकनंदा, भागीरथी सहित गंगा से सीधे अथवा अन्य से जुड़ी नदियों से नमूने लिए जा रहे हैं। राजस्थान की चंबल और बनास नदियां यमुना में मिलती हैं और यमुना गंगा में मिलती है।

पानी में प्रदूषण के वास्तविक कारणों की हो रही पड़ताल

गंगा से मिलने वाली प्रमुख नदियां

बिहार
गंडक, कोसी, सोन

झारखंड
दामोदर

उत्तराखंड
भागीरथी, अलकनंदा, मंदाकिनी, पिंडर

उत्तर प्रदेश
यमुना, रामगंगा, गोमती, सरयू, राप्ती

2,525 किलोमीटर में गोमुख से बंगाल की खाड़ी तक बहती है गंगा

> गंगा और उसकी सहायक नदियों से नमूने लेकर जांच की जा रही है ताकि पता चले कि किस तरह के प्रदूषण, भारी धातु व कण हैं जो जलीव जीव व वनस्पतियों के लिए हानिकारक हो सकते हैं।
>
> -डॉ. रुचि बडोला, वरिष्ठ वैज्ञानिक व डीन, भारतीय वन्यजीव संस्थान

> गंगा को प्रदूषण मुक्त करने के लिए कारणों का पता लगाया जा रहा है। नमूनों की जांच से विभिन्न इलाकों में प्रदूषण के वास्तविक कारण सामने आएंगे, जिसके आधार पर जल को स्वच्छ बनाने की कार्ययोजना बनेगी।
>
> - मुकुल राणा, रिसर्च टीम के सदस्य

पानी के साथ मिट्टी के भी नमूने लिए जा रहे

गंगा से जुड़ी नदियों के अलग-अलग स्थानों से पानी-मिट्टी के नमूने लिए जा रहे हैं। इसमें नदियों का उद्गम स्थल, नदी किनारे बसी आबादी, औद्योगिक क्षेत्र तथा गंगा में मिलने वाले स्थान शामिल हैं, ताकि प्रदूषण के कारणों का पता लगाया जा सके। इसके आधार पर इलाकेवार कार्ययोजना तैयार की जाएगी।

गोमुख से बंगाल की खाड़ी तक सर्वे

गोपालगंज पहुंची टीम के सदस्य अजय कुमार के अनुसार गोमुख से बंगाल की खाड़ी तक गंगा में मिलने वाली प्रमुख नदियों में प्रदूषण का आकलन हो रहा है। इसके लिए बिहार, कोटा (चंबल), वाराणसी, हल्द्वानी और अयोध्या में 15 शोधकर्ता कार्य कर रहे हैं। नदियों को ऊपरी, मध्य और निचले हिस्सों में विभाजित कर नमूने एकत्र किए जा रहे हैं।

Hindustan Page No-1

मोबाइल के उपयोग में राज्य देश में 28वें स्थान पर, आधी आबादी के पास अब भी मोबाइल नहीं

साइबर ठगी के हॉटस्पॉट में बिहार तीसरे स्थान पर

1.71 करोड़ लोग अब भी टूजी मोबाइल का इस्तेमाल कर रहे हैं

- साइबर ठगी में हरियाणा पहले तो महाराष्ट्र दूसरे पायदान पर है
- 90 हजार से ज्यादा ऑनलाइन धोखाधड़ी की शिकायतें दर्ज हुई हैं

पटना, मुख्य संवाददाता। मोबाइल के उपयोग में बिहार देश में 28वें स्थान पर है। यहां की 56.18 फीसदी आबादी मोबाइल का इस्तेमाल करती है। बिहार से अलग हुआ झारखंड भी इस मामले में हमसे आगे है। झारखंड के 64 फीसदी मोबाइल यूजर हैं, जबकि उत्तराखंड तो यह 104 फीसदी है। बिहार भले ही मोबाइल इस्तेमाल के मामले में पीछे है, लेकिन साइबर धोखाधड़ी के हॉटस्पॉट के मामले में देशभर में तीसरे स्थान पर है। इस मामले में हरियाणा पहले तो महाराष्ट्र दूसरे पायदान पर है।

बिहार में नालंदा, पटना, नवादा, शेखपुरा जिले से धोखाधड़ी सबसे ज्यादा हुई है। इन जगहों के तार अन्य राज्यों के साथ-साथ विदेशों से भी जुड़े हैं। साइबर ठगी के जो मामले सामने आए हैं, उनकी जांच में पाया गया कि सबसे ज्यादा धोखाधड़ी के फोन कॉल इन्हीं जगहों से हुए हैं।

दूर संचार विभाग के मुताबिक इस वर्ष 80 लाख के लगभग लोग साइबर ठगी के शिकार हुए हैं। 90 हजार से ज्यादा ऑनलाइन धोखाधड़ी की शिकायतें दर्ज हुई हैं। पिछले साल की तुलना में धोखाधड़ी के शिकार होनेवालों की संख्या में 40 फीसदी की कमी आई है। 2024 की बात करें तो एक करोड़ 40 लाख लोग साइबर अपराधियों के जाल में फंसे थे, लेकिन संचार साथी एप के कारण इस बार संख्या कम हुई है।

अन्य राज्यों में मोबाइल उपयोगकर्ता

राज्य	मोबाइल उपयोगकर्ता
झारखंड	63.95 फीसदी
उत्तर प्रदेश	70.30 फीसदी
उतराखंड	106.89 फीसदी
मध्य प्रदेश	69.35 फीसदी
राजस्थान	80.01 फीसदी

बिहार में 56.18% आबादी करती है मोबाइल का इस्तेमाल

बिहार की आधी आबादी के पास अभी भी मोबाइल नहीं है। अभी राज्य में सात करोड़ 38 लाख के पास मोबाइल है। इसमें भी एक करोड़ 71 लाख के पास टूजी सिम है। ये उपयोगकर्ता इंटरनेट का इस्तेमाल नहीं करते हैं। थ्रीजी सिम का इस्तेमाल करने वाले 31 लाख सात हजार 228 है।

> मोबाइल उपयोगकर्ता अभी बिहार में कम हैं। इस वर्ष दो फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। इसके बाद भी मात्र 56 फीसदी लोग ही मोबाइल का इस्तेमाल कर रहे हैं। अभी सात करोड़ 38 लाख लोग मोबाइल इस्तेमाल करते हैं।
>
> **-दिलीप कुमार,** उप महाप्रबंधक, दूरसंचार विभाग

Hindustan Page N-2

सुखद संयोग | पटना समेत अन्य जगहों पर दुर्लभ प्रजातियों के पक्षी भी नजर आ रहे, पटना के बीच एनआईटी कैंपस में भी प्रवासी पक्षियों ने डेरा जमाया

इस साल ज्यादा दिन रहेंगे प्रवासी पक्षी, शहर से जंगल तक बढ़ी मौजूदगी

पटना, मुख्य संवाददाता। इस साल पटना और नालंदा समेत पूरे बिहार में प्रवासी पक्षियों की मौजूदगी ज्यादा दिनों तक रहेगी। ठंड जल्द आ जाने से प्रवासी पक्षी हर साल की तुलना में इस वर्ष पहले आ गये। अनुमान है कि ठंड ज्यादा दिनों तक रहेगी। लिहाजा बिहार में प्रवासी पक्षी लंबे समय तक डेरा जमाएंगे।

बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी के गवर्निंग काउंसिल के सदस्य अरविंद मिश्रा ने बताया कि इस बार मानसून के बाद की बारिश से जलाशयों में जल की उपलब्धता अधिक होने से प्रवासी पक्षी बिहार में आकर ठहर गए। सहरसा के कोसी नदी के किनारे डनलिन पक्षी दिखाई दिए। यह पक्षी यूरोप की ओर से आते हैं। जबकि बक्सर गंगा किनारे ग्रे प्लोवर पक्षी दिखाई दी। बिहार में इस बार दुर्लभ प्रजाति के पक्षी ग्रेटर स्कॉप भी दिखे हैं।

फिलहाल ठंड के साथ ही झीलों, नदियों, आर्द्र भूमि से लेकर शहरों के शांत इलाकों तक में परिंदों की चहचहाहट सुनाई दे रही है। इस साल प्रवासी पक्षियों की संख्या पिछले कई वर्षों की तुलना में अधिक है।

राजगीर जू सफारी बना नया ठिकाना: बिहार के प्रमुख पर्यटन केंद्र राजगीर जू सफारी में इस बार प्रवासी पक्षियों की अच्छी-खासी मौजूदगी देखी जा रही है। जू सफारी के भीतर मौजूद जलाशय और घना हरित क्षेत्र पक्षियों के लिए सुरक्षित आश्रय बन गया है। यहां जलपक्षियों जैसे कॉमन सैंडपाइपर, ग्रीन सैंडपाइपर, लिटिल स्टिंट, टेनिंग स्टिंट के साथ कई दुर्लभ पक्षी भी नजर आ रहे हैं। जू सफारी के निदेशक के अनुसार शांत वातावरण और प्राकृतिक माहौल होने से पक्षियों को अनुकूल माहौल मिला है। गंगा और उसकी सहायक नदियों के किनारे भी जलपक्षियों की संख्या बढ़ी है। रेड क्रेस्टेड पोचार्ड (लालसर), पिनटेल, कॉमन टेल, शौवेलर, गार्गेनी और विभिन्न प्रजाति के बत्तख इस मौसम में देखे गए हैं। बढ़ी हुई हरियाली और आर्द्र भूमि संरक्षण ने इनके प्रवास को आसान बनाया है।

बक्सर में शुक्रवार को गंगा नदी किनारे उड़ता दिखा दुर्लभ प्रवासी पक्षी।

150 प्रजाति के प्रवासी पक्षी ठंड के मौसम में आते हैं बिहार

20 से अधिक देशों से प्रवासी पक्षी बिहार में डेरा जमाते हैं

शहर के बीच परिंदों का बसेरा

शहर के बीच भी प्रवासी पक्षियों ने डेरा जमाया है। एनआईटी पटना कैंपस में बर्ड वॉचिंग के दौरान कई प्रवासी प्रजातियां देखी गईं। छात्र और शिक्षक सुबह-शाम कैमरे और दूरबीन के साथ पक्षियों को देखने पहुंच रहे हैं। दानापुर कैंट जैसे अपेक्षाकृत शांत इलाकों में भी पेड़ों और जलस्रोतों के आसपास प्रवासी पक्षी नजर आ रहे हैं।

> इस बार ठंड जल्दी आ गई तो पक्षियों का आगमन भी हुआ है। यह भी एक कारण है कि प्रवासी पक्षियों की संख्या हर जगह दिखाई दे रही है। ठंड लंबी चली तो ये प्रवासी पक्षी ज्यादा दिनों तक यहां रुकेंगे।
>
> **-अरविंद मिश्रा,** सदस्य, गवर्निंग काउंसिल, बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी

पर्यावरण के लिए प्रवासी पक्षियों का आना जरूरी

पक्षी विशेषज्ञ अरविंद मिश्रा ने बताया कि लाखों की संख्या में प्रवासी पक्षी हमारे जलाशयों व उसके आसपास आते हैं। इनका मुख्य भोजन जलीय वनस्पतियां होती है। अगर ये पक्षी जलीय वनस्पतियां न खाएं तो ये जलाशय की तल में गाद के रूप में जमा होते जाएंगे।

Hindustan Page N-4

बड़े फैसले | वृद्धा पेंशन में की गई वृद्धि, रसोइया का मानदेय प्रतिमाह 1650 से बढ़ा कर 3300 रुपये किया गया

महिला स्वावलंबन की राह और मजबूत हुई

अलविदा 2025

06 प्रकार की पेंशन योजनाओं की राशि में 700 की वृद्धि की गई

महिलाओं को रोजगार देने की बड़ी पहल हुई

राज्य में महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त करने के लिए कई पहल इस साल सितंबर माह से शुरू हुई। राज्य सरकार महिलओं को रोजगार और व्यवसाय शुरू करने के लिए दो लाख रुपये तक की मदद दे रही है। दूसरी ओर इन्हें सुगमता से लोन उपलब्ध कराने के लिए जीविका बैंक की भी शुरुआत कर दी है।

संगठित अपराध और बालू माफिया पर कड़ी चोट

पुलिस ने इस साल बालू, जमीन, शराब और परीक्षा माफिया के संगठित अपराध पर कड़ी चोट की। इसके तहत संगठित अपराधियों की कमर तोड़ने के लिए राज्य सरकार के स्तर पर अपराध से अर्जित संपतियां जब्त करने की कार्रवाई शुरू की गयी। एसओपी बना कर संबंधित पदाधिकारियों की जिम्मेदारियां निर्धारित की गयी।

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। चुनावी साल 2025 में कई बड़े फैसले लिए गए। बिहार से शुरू एसआईआर अब पूरे देश में कराया जा रहा है। सात निश्चय-03 के तहत की गई घोषणाओं पर अमल हो जाने के बाद राज्य में उद्योग-धंधों का विकास होगा। युवाओं को घर पर रोजगार मिलने लगेगा। शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं में भी बढ़ोतरी होगी। सामाजिक सुरक्षा पेंशन में बढ़ोतरी ने जहां बुजुर्गों, दिव्यांगों, विधवाओं को आर्थिक ताकत दी तो महिला रोजगार योजना ने महिलाओं को स्वावलंबी बनने की आस जगाई है। 125 यूनिट तक मुफ्त बिजली ने गरीबों की बचत बढ़ाई है। अपराधियों की संपत्ति-जब्ती शुरू होने से अपराध में कमी की उम्मीद भी जगी।

सात निश्चय 03 लागू हुआ : सरकार ने राज्य में अगले पांच सालों के लिए सात निश्चय-3 को लागू किया है। राज्य कैबिनेट ने 16 दिसंबर को इसकी स्वीकृति दी। इसमें प्रति व्यक्ति औसत आय को बढ़ाना, उद्योगों का विकास, कृषि उत्पादन में वृद्धि और खाद्य प्रसंस्करण को बढ़ावा, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधा की उपलब्धता, नागरिक सुविधाओं को सुदृढ़ करना और लोगों के जीवन को आसान बनाने का संकल्प राज्य सरकार ने लिया है।

एसआईआर से फर्जी वोटर हटे : भारत निर्वाचन आयोग द्वारा बिहार विधानसभा चुनाव के पूर्व देश में सबसे पहले बिहार में मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) कराना शामिल है। बिहार में एसआईआर की प्रक्रिया के बाद करीब 68 लाख मतदाताओं के नाम हटे हैं।

Hindustan Page No-2

निजी शिक्षा और स्वास्थ्य से बढ़ी परेशानी

भारत आज जब वैश्विक मंचों पर आर्थिक शक्ति, तकनीकी नेतृत्व और कूटनीतिक प्रभाव की बात कर रहा है, उसी समय करोड़ों परिवारों के सामने एक साझा चिंता खड़ी है, बच्चों की शिक्षा कितनी महंगी होगी, बीमारी आने पर इलाज कैसे होगा और कैंसर जैसी भयावह बीमारी से कैसे निपटा जाएगा?

यही तीन प्रश्न आज भारत की सामाजिक सच्चाई और नीति-निर्माण की कसौटी बन चुके हैं। भारत इक्कीसवीं सदी में जिस ऐतिहासिक मोड़ पर खड़ा है, वहां आर्थिक वृद्धि, तकनीकी प्रगति और वैश्विक प्रभाव के साथ-साथ यह एक बड़ा प्रश्न लगातार उभर रहा है। किसी भी राष्ट्र की वास्तविक प्रगति का आकलन उसके सकल घरेलू उत्पाद या वैश्विक रैंकिंग से नहीं, बल्कि इस बात से किया जाना चाहिए कि वहां का एक साधारण परिवार कितनी सहजता से शिक्षा और स्वास्थ्य तक पहुंच पा रहा है। भारत में आज सस्ती शिक्षा और सस्ता इलाज केवल नीतिगत मुद्दे नहीं, बल्कि करोड़ों परिवारों के अस्तित्व भविष्य और सामाजिक स्थिरता से जुड़े जीवन-मरण के प्रश्न बन चुके हैं। अनेक विचारकों ने कहा, सस्ती शिक्षा व इलाज हर व्यक्ति की जरूरत है, बड़ी बीमारियां मरीजों के अलावा उनके परिवार पर भी भयंकर त्रासदी लाती हैं। संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक और विश्व स्वास्थ्य संगठन जैसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर यह बार-बार स्वीकार किया गया है कि शिक्षा और स्वास्थ्य किसी भी देश की मानव पूंजी का मूल स्तंभ होते हैं। शिक्षा व्यक्ति को सोचने, निर्णय लेने और समाज में योगदान करने की क्षमता देती है, जबकि स्वास्थ्य उसे उस क्षमता का उपयोग करने योग्य बनाता है। यदि इनमें से कोई एक भी कमजोर हो, तो विकास की पूरी संरचना असंतुलित हो जाती है।

किसी भी देश में शिक्षा और स्वास्थ्य केवल सेवाएं नहीं होतीं, वे नागरिक की गरिमा, अवसर और भविष्य की गारंटी होती हैं। भारत में सस्ती शिक्षा और सस्ता इलाज अब केवल मध्यम वर्ग की मांग नहीं रहे, बल्कि गरीब, निम्न-मध्यम और यहां तक कि स्थिर आय वाले परिवारों के लिए भी जीवन की प्राथमिक जरूरत बन चुके हैं। एक बच्चा यदि पढ़ नहीं पाता, तो उसका भविष्य सीमित हो जाता है। भारत में शिक्षा को संविधान ने मौलिक अधिकार माना, लेकिन जमीनी हकीकत यह है कि अच्छी शिक्षा अब क्षमता से अधिक खर्च मांग रही है। आज एक औसत परिवार अपने बच्चे की पढ़ाई के लिए कर्ज लेने को मजबूर है। यह स्थिति केवल परिवार की बचत नहीं, बल्कि समाज की समानता को भी कमजोर करती है।

किशन भावनानी, टिप्पणीकार

अनुलोम-विलोम

शिक्षा- स्वास्थ्य

बदलावों का महत्वपूर्ण वाहक रहा निजी क्षेत्र

भारत में शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में बड़े बदलाव हो रहे हैं। देश में शिक्षा का स्तर व्यापक सुधार का संकेत देता है। नई शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के तहत, रटंत विद्या के बजाय कौशल विकास, लचीली शिक्षा और 5+3+3+4 संरचना (नींव से लेकर माध्यमिक तक) पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। हालांकि, असर-2024 रिपोर्ट के अनुसार, प्राथमिक स्तर पर सीखने के परिणाम (जैसे कक्षा 3 के छात्रों का कक्षा 2 का पाठ न पढ़ पाना) अभी भी चिंता के विषय हैं।

शिक्षा के मामले में सकारात्मक बात यह है कि भारत में दुनिया का सबसे बड़ा शैक्षिक ढांचा मौजूद है, जिसमें लगभग 15 लाख स्कूल, करीब 26 करोड़ छात्र और 1,168 से अधिक विश्वविद्यालय हैं। भारत शिक्षा की दृष्टि से वैश्विक स्तर पर सुधार कर रहा है, और कुछ रिपोर्टों में इसे 40वें स्थान पर रखा गया है। हालांकि, अब भी यहां शिक्षा क्षेत्र में बड़ी चुनौतियां हैं। इनमें ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच शिक्षा की गुणवत्ता में बड़ा अंतर है। उच्च शिक्षा में शिक्षक-छात्र अनुपात 24:1 है, जो ओईसीडी के 16:1 के औसत से कम है। इसके अलावा, प्रारंभिक साक्षरता दर अभी भी कम है। नई शिक्षा नीति 2020 का लक्ष्य 21वीं सदी की जरूरतों के अनुरूप, मातृभाषा में शिक्षा, तकनीकी एकीकरण और समग्र विकास को बढ़ावा देना है। वहीं देखें, तो विश्वविद्यालयों की संख्या बढ़ी है, हालांकि शोध और विश्व स्तरीय रैंकिंग में सुधार की आवश्यकता अभी भी है। कुल मिलाकर, भारत में शिक्षा प्रणाली का विस्तार बहुत बेहतर हुआ है, लेकिन अब मुख्य फोकस शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने पर है।

वहीं स्वास्थ्य क्षेत्र को देखा जाए, तो अभी हाल में ही भारत ने परंपरागत इलाज पर दूसरे वैश्विक सम्मेलन का आयोजन किया है। देश में डिजिटल स्वास्थ्य समेकन हुआ है और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल काफी बढ़ा है। इसके साथ ही ई-संजीवनी और टेली मेंटल हेल्थ सेवा जैसे मंच दूर-दराज के ग्रामीण इलाकों तक स्वास्थ्य सेवाओं को फैलाने में सहयोगी रहे हैं। उनपर आर्थिक बोझ कम हुआ है। चेचक, प्लेग आदि कई गंभीर बीमारियों का देश से उन्मूलन हो गया है।

इसी तरह मलेरिया और टीबी जैसी संक्रामक बीमारियों में काफी कमी दर्ज की गई है। हालांकि, जीवन-शैली में बदलाव से कई तरह की नई बीमारियां भी सामने आई हैं, लेकिन यह उतनी चिंता की बात नहीं है, क्योंकि इन बीमारियों का उन्मूलन जीवन स्तर में सुधार लाकर किया जा सकता है। अतः अधिक घबराने की नहीं, बल्कि जीवनशैली में उत्तरोत्तर सुधार किए जाने की जरूरत है।

राहुल रंजन शुक्ला, टिप्पणीकार

Hindustan Page No-16

टैरिफ से मुकाबले के लिए भारत 'आत्मनिर्भर' बना

साल 2025 वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए आसान नहीं था। अमेरिकी टैरिफ, पश्चिम एशिया और यूक्रेन जैसे भू-राजनीतिक तनाव और डॉलर की मजबूती ने पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्थाओं को दबाव में रखा। ऐसे माहौल में भारत के सामने सबसे बड़ी चुनौती थी विकास की रफ्तार बनाए रखना और महंगाई को काबू में रखना। इस कसौटी पर देश खरा उतरता दिखा। अमेरिकी द्वारा 50 प्रतिशत का उच्च टैरिफ लगाने के बावजूद भारत की वृद्धि दर दुनिया में सबसे तेज रही। महंगाई रिकॉर्ड निचले स्तर पर पहुंची और सरकार की नई योजनाओं ने अर्थव्यवस्था को बूस्ट किया। कुल मिलाकर यह साल 'आत्मनिर्भर' भारत की ताकत दिखाता है।

ट्रंप के टैरिफ के बावजूद दुनिया में सबसे तेज विकास दर

साल 2025 में भारतीय अर्थव्यवस्था ने सभी अनुमानों को पीछे छोड़ दिया। वित्त वर्ष 2024-25 में जीडीपी वृद्धि 6.5% रही, जो दुनिया की शीर्ष अर्थव्यवस्था में सबसे अधिक थी। तेज वृद्धि का यह सिलसिला चालू वित्त वर्ष में भी जारी है और इसकी दो तिमाहियों में ही जीडीपी ने अनुमानों को पछाड़ दिया। भारत की आर्थिक वृद्धि दर पहली तिमाही में 7.8 प्रतिशत रही। इससे पहले आईएमएफ ने जुलाई में भारत की आर्थिक वृद्धि के अपने अनुमान को संशोधित कर 6.4 प्रतिशत कर दिया था। दूसरी तिमाही में तो वृद्धि दर ताबड़तोड़ रफ्तार के साथ 8.2% पर पहुंच गई, जो पिछली छह तिमाहियों में सबसे ज्यादा है। इसके बाद आईएमएफ ने वृद्धि दर के अनुमान को बढ़ाकर पूरे साल के लिए 6.6% कर दिया है। रेटिंग एजेंसियां का अनुमान है कि पूरे वित्त वर्ष के लिए भारत की वृद्धि दर 7 से 8% के बीच रह सकती है।

घरेलू मांग से मिला बड़ा सहारा

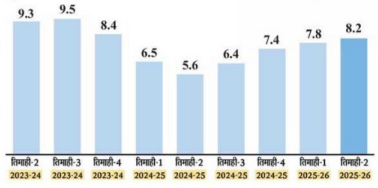

अमेरिका ने भारत पर अप्रैल में पहले 25% टैरिफ लगाया था, जिसे अगस्त में बढ़ाकर 50% कर दिया। इसका असर निर्यात क्षेत्र पर जरूर देखा गया लेकिन भारतीय अर्थव्यवस्था ने मजबूती दिखाई। यह वृद्धि अचानक नहीं आई, इसके पीछे घरेलू मांग में तेजी, जीएसटी में व्यापक सुधार, सेवा क्षेत्र में निरंतर कमाई और पीएलआई का मिश्रण है। इसके अलावा भारत ने अप्रैल से अब तक तीन देशों के साथ व्यापार समझौतों पर वार्ता पूरी कर ली है। इनमें ब्रिटेन, न्यूजीलैंड और ओमान शामिल हैं। वहीं, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, ईयू और कनाडा समेत 50 देशों से वार्ता जारी है।

नई पहल ने इन क्षेत्रों में जान फूंकी

केंद्र ने कई क्षेत्रों में नई योजनाएं शुरू कीं, जो वृद्धि की रीढ़ बनीं। कर छूट, जीएसटी सुधार और मौद्रिक नीति से उपभोग और निवेश बढ़ा।

- **बिजली क्षेत्र:** नवीकरणीय ऊर्जा पर फोकस, जिससे विनिर्माण वृद्धि 4.8% हुई और औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) 4% ऊपर गया।
- **शहरी विकास:** भारतमाला, सागरमाला और पर्वतमाला जैसी योजनाओं से बुनियादी ढांचा हुआ और रोजगार के अवसर बढ़े।
- **खनन और वित्तीय:** उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना से रोजगार-समृद्ध क्षेत्र जैसे कृषि-प्रसंस्करण में निवेश आया। मेक इन इंडिया से 25 क्षेत्रों में निर्यात बढ़ा।
- **सेवा क्षेत्र:** डिजिटल और शिक्षा क्षेत्र में 6.2% की वृद्धि दर्ज हुई।

महंगाई: आम आदमी को मिली बड़ी राहत

इस साल महंगाई के मोर्चे पर भी बड़ी राहत मिलती दिखाई दी, जो अर्थव्यवस्था की स्थिरता का सबूत है। खुदरा महंगाई दर सितंबर में 1.54% पर पहुंची, जो 8 साल का सबसे निचला स्तर है। अक्टूबर में यह और गिरकर 0.3% हो गई, जबकि नवंबर में 0.71% रही। वहीं, थोक महंगाई नवंबर में -0.32% रही, यानी कीमतों में गिरावट आई। पिछले साल (2024) के मुकाबले खुदरा महंगाई औसतन 2-3% कम रही, जबकि थोक में डिफ्लेशन देखा गया। महंगाई में गिरावट के मुख्य कारणों में अच्छी फसल पैदावार, आपूर्ति श्रृंखला में सुधार, कच्चे तेल की कम कीमतें और जीएसटी दरों में कटौती आदि शामिल रहे। महंगाई कम होने से भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने इस साल रेपो दर को चार बार घटाकर 6.50 से 5.25 फीसदी कर दिया है। इससे होम लोन, कार लोन और पर्सनल लोन की ब्याज दरें घटी हैं, जिसका सीधा फायदा आम लोगों को मिला है।

मासिक किस्त घटी

- खुदरा महंगाई में नरमी के बाद आरबीआई ने फरवरी से अब तक रेपो दर में 1.15% की कटौती की
- इससे आवास ऋण की फ्लोटिंग ब्याज दरें 8.75 से घटकर 7.50 फीसदी तक आई गई हैं

सोना-चांदी: निवेशकों के भरोसे और कमाई में अव्वल

2025 में सोना और चांदी ने निवेशकों को सबसे ज्यादा लाभ दिया। चांदी ने करीब 140 फीसदी तो सोने ने 78% से अधिक का रिटर्न दिया। पिछले साल की तुलना में यह दोगुना से भी अधिक मुनाफा है। चांदी ने साल 2024 में 38% तक और सोने ने करीब 25 फीसदी तक रिटर्न दिया था। इस साल सोने के दाम 1,38,200 रुपये प्रति 10 ग्राम के सर्वकालिक उच्च स्तर को छू गए। जनवरी में इसका भाव 77,723 रुपये के आसपास था। इसी तरह चांदी ने 2,14,500 रुपये प्रति किलोग्राम का नया शिखर छू लिया। जनवरी में इसका भाव 89,900 रुपये था। खनन उत्पादन में गिरावट और औद्योगिक मांग में तेजी से चांदी की कीमतों में तेज उछाल आया है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि अगले साल भी यह रुझान जारी रह सकता है और चांदी के दाम 2.50 लाख का स्तर छू सकते हैं। वहीं, सुरक्षित निवेश की मांग बढ़ने से सोने के दाम अगले साल 1.60 लाख स्तर छू सकते हैं।

140 फीसदी का मुनाफा दे चुकी है चांदी इस कैलेंडर वर्ष में

78 प्रतिशत तक रिटर्न दिया सोने ने इस साल निवेशकों को

1.25 लाख रुपये के करीब चढ़ चुकी है चांदी की कीमत इस साल

शेयर बाजार: घरेलू निवेशक बने ताकत

2025 में सेंसेक्स और निफ्टी ने रिकॉर्ड ऊंचाई छुई, लेकिन वैश्विक अनिश्चितता से अस्थिरता बढ़ी। एफआईआई की कुल शुद्ध निकासी 1,57,860 करोड़ रुपये रही, जो अमेरिकी शुल्क, उच्च मूल्यांकन और डॉलर की मजबूती जैसे कारणों से हुई। दूसरी तरफ, घरेलू संस्थागत निवेशकों ने कुल 5,42,614 करोड़ रुपये का शुद्ध निवेश किया। छोटे और खुदरा निवेशकों ने भी मजबूत रुख दिखाया। प्रत्यक्ष इक्विटी में उनका शुद्ध निवेश अपेक्षाकृत कम रहा लेकिन म्यूचुअल फंड्स के जरिए उनका योगदान महत्वपूर्ण रहा। यह रुख खुदरा निवेशकों की बढ़ती भागीदारी को दिखाता है। एजेंसियों का अनुमान है कि अगर टैरिफ घटे तो बाजार में तेजी आएगी और सेंसेक्स अगले साल 94,000 तक पहुंच सकता है। वहीं निफ्टी 30 हजार अंक का आंकड़ा छू सकता है।

इन मोर्चों पर भी सफलता

जीएसटी संग्रह

पूरे साल औसत मासिक संग्रह 1.9 लाख करोड़ रुपये रहा। पिछले साल के मुकाबले छह फीसदी तक की वृद्धि हुई। अक्टूबर में 1.95 लाख और नवंबर में 1.70 लाख करोड़ का राजस्व मिला। अप्रैल में रिकॉर्ड 2.36 लाख करोड़ का संग्रह हुआ।

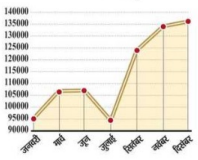

व्यापार समझौता (एफटीए)

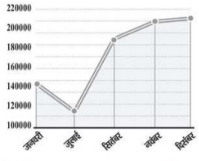

इस साल ओमान के साथ व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते (सीईपीए) हस्ताक्षर हुए। चिली के साथ वार्ता शुरू हुई। यूरोपीय संघ, ब्रिटेन, न्यूजीलैंड के साथ बातचीत अंतिम दौर में है। करीब 13 सक्रिय व्यापार समझौतों पर बातचीत चल रही है।

यूपीआई

यूपीआई ने रिकॉर्ड प्रदर्शन किया। पूरे साल कुल लेनदेन की मात्रा लगभग 230 अरब रही, जबकि मूल्य 299 लाख करोड़ रुपये तक पहुंचा। नवंबर में ही 20.47 अरब लेनदेन हुए, जबकि मूल्य 26.32 लाख करोड़ रहा। पिछले साल से मात्रा में 30-35% वृद्धि हुई है।

आयकर

मूल्यांकन वर्ष 2025-26 के लिए दिसंबर 2025 तक 8.43 करोड़ से ज्यादा आयकर रिटर्न दाखिल हुए। वहीं, प्रत्यक्ष कर संग्रह अप्रैल से दिसंबर 17 तक 17.05 लाख करोड़ रहा, जो 8% सालाना वृद्धि है।

विदेशी मुद्रा भंडार

विदेशी मुद्रा भंडार का स्तर भी इस साल मजबूती का पैमाना रहा। 2025 में विदेशी मुद्रा भंडार का रिकॉर्ड उच्च स्तर 692.58 अरब डॉलर रहा, जो 21 नवंबर 2025 को दर्ज किया गया। हालांकि, सर्वकालिक रिकॉर्ड 704.89 अरब डॉलर है, जो सितंबर 2024 में बना था। दिसंबर 2025 में भंडार 688.95 अरब डॉलर के आसपास रहा।

भारतीय अर्थव्यवस्था को चुनौतियों के बीच तलाशने होंगे विकास के अवसर

विशेषज्ञ की राय

डॉ. अरुण कुमार
सेवानिवृत, जेएनयू

आने वाला वर्ष भारत की अर्थव्यवस्था के लिए बेहद अहम रहने वाला है। फिलहाल देश में महंगाई नियंत्रित है और आर्थिक विकास दर में सुधार देखने को मिल रहा है, लेकिन इसके बावजूद भारत के सामने कई बड़ी चुनौतियां बनी हुई हैं। अमेरिका की ओर से लगाए जाने वाले टैरिफ और वैश्विक परिस्थितियां भारत के लिए चिंता का विषय हैं। ऐसे में अगले वर्ष भारत का निर्यात और आर्थिक विकास काफी हद तक भारत-अमेरिका द्विपक्षीय व्यापार समझौते पर निर्भर करेगा।

भारत को अब तेजी से नए अंतरराष्ट्रीय बाज़ारों की तलाश करनी होगी। वर्तमान में भारत कई देशों के साथ व्यापार समझौतों पर बातचीत कर रहा है, जिन्हें जल्द पूरा करना जरूरी है। खास तौर पर भारत-ईयू के बीच प्रस्तावित व्यापार समझौते से काफी उम्मीदें जुड़ी हैं। इसके अलावा, ओमान, न्यूजीलैंड और अन्य देशों के साथ होने वाले द्विपक्षीय और मुक्त व्यापार समझौतों से भारत के लिए निर्यात के नए रास्ते खुल सकते हैं।

मौजूदा वैश्विक माहौल को देखते हुए यह बात साफ हो गई है कि अब भारत को बाहरी निर्भरता कम करने पर ध्यान देना होगा। ऐसे में कृषि और असंगठित क्षेत्र को मजबूत करने की जरूरत है। कृषि क्षेत्र पर 46 प्रतिशत लोगों की निर्भरता है।इस कारण से कृषि क्षेत्र को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। कृषि और असंगठित क्षेत्र में सुधारात्मक काम किए जाने से न सिर्फ देश में उत्पादन बढ़ेगा, बल्कि निर्यात को भी बढ़ावा मिलेगा। देश के भीतर व्यापार सुगमता बढ़ाने पर विशेष ध्यान देना होगा, जिससे भारत एक मजबूत उत्पादक और निर्यात केंद्र के रूप में उभर सके।

उम्मीदें@2026

1 रुपये में ऐतिहासिक गिरावट

- इस साल रुपये में रिकॉर्ड गिरावट आई और यह पहली बार डॉलर के मुकाबले 91 रुपये के स्तर पर पहुंच गया।
- विदेशी संस्थागत निवेशकों की निकासी, डॉलर की मजबूती और व्यापार असंतुलन से रुपया टूटा है।

2 अमेरिका से करार अटका

अमेरिका से द्विपक्षीय व्यापार समझौता अभी अधर में है। कई दौर की बातचीत हो चुकी है लेकिन कई मुद्दों पर सहमति न बन पाने के कारण करार अटका है। माना जा रहा है कि समझौते के पहले चरण को लागू करने के लिए दोनों देश फैसला ले सकते हैं।

3 बढ़ता व्यापार घाटा

व्यापार घाटा 2025 में रिकॉर्ड स्तर पर पहुंचा, जो अर्थव्यवस्था के लिए नए जोखिम पैदा कर रहा है। अक्टूबर में भारत का निर्यात 11.8 प्रतिशत घटकर 34.38 अरब डॉलर रह गया। वहीं सोने के आयात में उछाल के कारण व्यापार घाटा बढ़कर 41.68 अरब डॉलर के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया।

Useful For Mains

वेदना से चेतना तक

रामानुज पाठक

मनुष्य का जीवन केवल घटनाओं की श्रृंखला नहीं है, बल्कि अनुभूतियों की एक सतत् और गहन यात्रा है। इस यात्रा में सुख जितना क्षणिक होता है, वेदना उतनी ही गहरी और स्थायी अनुभूति के रूप में सामने आती है। संघर्ष, असफलता, हानि और अपूर्णता- ये सभी जीवन को केवल चुनौती नहीं देते, बल्कि उसके अर्थ पर प्रश्न भी खड़े करते हैं। प्रत्येक अनुभव अपने भीतर वेदना का बीज लिए होता है, लेकिन यह वेदना स्वयं में लक्ष्य नहीं है। उसका वास्तविक मूल्य तभी प्रकट होता है, जब वह चेतना में रूपांतरित हो जाती है।

चेतना वह दृष्टि है, जो वेदना को केवल सहने योग्य नहीं, बल्कि समझने योग्य बनाती है। बिना चेतना के वेदना अंधकार है- दिशाहीन, बोझिल और अर्थहीन। मगर चेतना के स्पर्श से वही वेदना आत्मबोध, विवेक और जीवनदर्शन का स्रोत बन जाती है। इतिहास, दर्शन और मानव अनुभव बार-बार इस सत्य की पुष्टि करते हैं कि केवल पीड़ा से महानता नहीं जन्म लेती, बल्कि पीड़ा को समझने की क्षमता से मनुष्य ऊंचा उठता है। इसी गहन सत्य की अभिव्यक्ति है यह कथन- 'वेदना बगैर चेतना दुर्लभ है।'

दार्शनिक दृष्टि से वेदना केवल पीड़ा नहीं, बल्कि जीवन की गूंज है। वह हमारे भीतर प्रश्न, जिज्ञासा और आत्मनिरीक्षण को जन्म देती है। चेतना ही वह माध्यम है, जो वेदना को साधारण अनुभव से ऊपर उठाकर व्यक्तित्व, विवेक और जीवन दर्शन में रूपांतरित करती है। महात्मा बुद्ध ने जीवन की सार्वभौमिक पीड़ा- जन्म, मृत्यु, रोग और वृद्धावस्था- का साक्षात्कार कर उसे करुणा और आत्म-ज्ञान की चेतना में बदला। इसी प्रकार महर्षि पतंजलि ने चित्त-वृत्तियों के संघर्ष को योगदर्शन में रूपांतरित किया और आदिकवि वाल्मीकि ने अपने जीवन की हिंसा और अवमानना को करुणा तथा काव्य की चेतना में ढाल दिया।

दुनिया मेरे आगे

> इतिहास में अनेक ऐसे प्रसंग मिलते हैं जहां पराजय, अपमान और कष्ट केवल दुख बनकर नहीं रुके, बल्कि चेतना का स्रोत बने। यूनानी दार्शनिक सुकरात ने मृत्यु-दंड को भी सत्य और विवेक की साधना में बदल दिया। कबीर ने सामाजिक तिरस्कार और उपेक्षा को आत्मबोध तथा निर्भीक वैचारिक चेतना का माध्यम बनाया।

इतिहास में अनेक ऐसे प्रसंग मिलते हैं जहां पराजय, अपमान और कष्ट केवल दुख बनकर नहीं रुके, बल्कि चेतना का स्रोत बने। यूनानी दार्शनिक सुकरात ने मृत्यु-दंड को भी सत्य और विवेक की साधना में बदल दिया। कबीर ने सामाजिक तिरस्कार और उपेक्षा को आत्मबोध तथा निर्भीक वैचारिक चेतना का माध्यम बनाया। इन उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि चेतना वेदना से पलायन नहीं सिखाती, बल्कि उसे समझकर पार करने की शक्ति देती है।

जीवन में प्रत्येक चुनौती, असफलता और कठिनाई वेदना का अनुभव कराती है- चाहे वह शारीरिक चोट हो, मानसिक संताप, सामाजिक असमानता या आर्थिक हानि। अगर इन अनुभवों को केवल दुख या शिकायत के रूप में स्वीकार कर लिया जाए, तो वे निरर्थक बोझ बन जाते हैं, लेकिन जब वही अनुभव आत्मचिंतन का कारण बनते हैं, तब वे हमारे दृष्टिकोण, निर्णय और आचरण को परिष्कृत करते हैं। यही वह क्षण होता है, जब वेदना चेतना में रूपांतरित होती है।

चेतना केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं रहती, वह सामाजिक और नैतिक दायित्व का रूप भी ग्रहण करती है। इतिहास गवाह है कि जिन समाजों ने अपने सामूहिक दुख को समझा और उसका विवेकपूर्ण विश्लेषण किया, उन्होंने परिवर्तन और पुनर्निर्माण का मार्ग चुना। इसके विपरीत, जहां पीड़ा केवल क्रोध, प्रतिशोध या पलायन में बदल गई, वहां विनाश और विघटन ही परिणाम बना। इस प्रकार चेतना, वेदना को सृजनात्मक शक्ति में रूपांतरित कर देती है।

आखिर में यह स्पष्ट हो जाता है कि वेदना से मुक्त जीवन की कल्पना अवास्तविक है, लेकिन चेतना-विहीन जीवन निश्चय ही अर्थहीन है। वेदना मनुष्य को तोड़ भी सकती है और गढ़ भी सकती है- यह अंतर केवल चेतना का है। इतिहास के महान व्यक्तित्व, दार्शनिक चिंतक और सामाजिक परिवर्तनकर्ता इसलिए स्मरणीय हैं, क्योंकि उन्होंने अपनी पीड़ा को पलायन या प्रतिशोध में नहीं, बल्कि आत्मबोध, उत्तरदायित्व और करुणा में बदला।

वेदना जब केवल सहन की जाती है, तो वह बोझ बनती है, जब समझी जाती है, तो वही चेतना बन जाती है। यही चेतना मनुष्य को उसके निजी दुख से ऊपर उठाकर सामाजिक संवेदना, नैतिक दृष्टि और मानवीय करुणा से जोड़ती है। बिना चेतना के अनुभव केवल स्मृतियां होते हैं, लेकिन चेतना से युक्त अनुभव इतिहास बन जाते हैं। इसलिए यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि वेदना जीवन की अपरिहार्यता है, पर चेतना उसका उत्कर्ष। चेतना ही वह दीपक है, जो वेदना के अंधकार में अर्थ, दिशा और आशा का प्रकाश भरता है। जब तक मनुष्य वेदना को समझने का साहस नहीं करता, तब तक वह केवल पीड़ित रहता है, लेकिन जिस क्षण वह उसे चेतना में रूपांतरित कर लेता है, उसी क्षण वह सचेत, जाग्रत और पूर्ण मनुष्य बन जाता है।

यही कारण है कि वेदना बगैर चेतना, न केवल दुर्लभ है, बल्कि मानवीय गरिमा और विकास की कसौटी भी है। इस दृष्टि से देखा जाए, तो आधुनिक समय की सबसे बड़ी चुनौती वेदना की अधिकता नहीं, बल्कि चेतना की न्यूनता है। सूचना, गति और उपलब्धियों से भरे इस युग में मनुष्य अनुभव तो बहुत करता है, पर उन्हें आत्मसात करने का अवकाश खोता जा रहा है। परिणामस्वरूप वेदना संचित होती जाती है, लेकिन चेतना में रूपांतरित नहीं हो पाती। ऐसे में आवश्यक है कि व्यक्ति ठहरकर देखे, अनुभवों पर विचार करे और उनसे संवाद स्थापित करे। यही ठहराव, यही आत्मसंवाद वेदना को चेतना में बदलने की प्रक्रिया है, जो मनुष्य को केवल जीवित नहीं, बल्कि जाग्रत बनाती है।

ऊर्जा की जरूरतों का हरित विकल्प

हरित हाइड्रोजन में कार्बन उत्सर्जन कम करने और ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल करने की अपार क्षमता है। यह परिवहन और उद्योग में पारंपरिक जीवाश्म ईंधन की जगह ले सकता है, जो ऊर्जा का एक निरंतर और विश्वसनीय स्रोत होगा।

अखिलेश आर्येंदु

केंद्र सरकार ऊर्जा की कमी को पूरा करने के लिए हरित हाइड्रोजन को बढ़ावा दे रही है। सरकार का लक्ष्य है, हर वर्ष 50 लाख टन हरित हाइड्रोजन के जरिए ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि हासिल करना। गौरतलब है हरित हाइड्रोजन उद्योग जिस तरह बड़े पैमाने पर स्थापित हो रहे हैं, ऐसे में उच्च क्षमता वाला बिजली उत्पादन और विभिन्न क्षेत्रों में ऊर्जा की आपूर्ति हासिल करना मुश्किल नहीं होगा। वर्तमान में वैश्विक हाइड्रोजन आपूर्ति के लिए जो विधि उपयोग में लाई जा रही है, वह सुगम और सस्ती है। मगर वहीं पर हाइड्रोजन ऊर्जा की आपूर्ति के आंकड़े वर्तमान में सीमित हैं, क्योंकि दुनिया में करीबन 96 फीसद हाइड्रोजन हाईड्रोकार्बन से पैदा होती है। इसमें महज तकरीबन चार फीसद बिजली के इलेक्ट्रोलिसिस (विद्युत अपघटन) द्वारा तैयार की जाती है। भारत सरकार चाहती है कि जब तक हर गांव और बाजार-मुहल्ले की ऊर्जा जरूरतें इसके जरिए न पूरी होने लगें, तब तक इसके लिए लगातार कोशिश करते रहना चाहिए। इससे जागरूकता आएगी और लोग हाइड्रोजन ईंधन की महत्ता को भी समझने लगेंगे।

हाइड्रोजन आने वाले वक्त का ऊर्जा आपूर्ति का आधार बनेगा। हरित हाइड्रोजन में कार्बन उत्सर्जन कम करने और ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल करने की अपार क्षमता है। यह परिवहन और उद्योग में पारंपरिक जीवाश्म ईंधन की जगह ले सकता है, जो ऊर्जा का एक निरंतर और विश्वसनीय स्रोत होगा। कह सकते हैं कि जीवाश्म ईंधन में कमी लाने वाला ऊर्जा विकल्प का सबसे बेहतर स्रोत हरित हाइड्रोजन बनने जा रहा है। आने वाले समय में शायद हर क्षेत्र में इसका इस्तेमाल होगा। जिंदगी को अधिक सुगम बनाने के लिए इसका उपयोग समाज के प्रत्येक वर्ग की जिंदगी को प्रभावित करेगा।

उत्तर प्रदेश जैसे कुछ बड़े राज्य स्वच्छ किफायती और टिकाऊ ऊर्जा के लिए बड़े सोलर पार्क, हरित हाइड्रोजन, विकेंद्रीकृत ऊर्जा, और माइक्रो ग्रिड के जरिए ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने पर खास जोर दे रहे हैं। राज्य सरकार ने 2047 तक इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए विशेषज्ञों के साथ मिल कर आगे की कार्ययोजना तैयार की है। इसी तरह की योजना देश के सभी राज्यों को तैयार करनी होगी, क्योंकि कार्बन-मुक्त ऊर्जा पैदा करने के लिए जैव ऊर्जा सबसे किफायती है। इससे बेहतर दूसरा कोई विकल्प नहीं है। हरित हाइड्रोजन में कई संभावनाएं छिपी हैं।

दरअसल, ऊर्जा क्षेत्र में कमी को पूरा करने के लिए सरकार हरित हाइड्रोजन को बढ़ावा दे रही है। नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के अनुसार वैश्विक क्षमताओं के बीच भारत को अपने राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन के मिशन के माध्यम से 2030 तक 50 लाख टन (एमएमटी) वार्षिक हरित हरित हाइड्रोजन क्षमता हासिल करने के लिए मेहनत करनी होगी। इसके लिए केंद्र सरकार ने वित्तीय वर्ष 2023-24 से 2030 तक राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन लागू करने के लिए 19.744 करोड़ का परिव्यय मंजूर कर चुकी है। इससे देशभर में हाइड्रोजन ईंधन को बढ़ावा दिया जाएगा। यह पारंपरिक जीवाश्म ईंधन की जगह ले सकता है, जो ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।

हरित हाइड्रोजन पर तीसरे अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में बताया गया कि भारत निर्धारित लक्ष्य हासिल कर लेगा। यह इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि 2023 में शुरू किए गए राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन के तहत भारत ने 2030 तक हरित हाइड्रोजन की वार्षिक उत्पादन क्षमता जोड़ने की वार्षिक उत्पादन क्षमता 50 लाख टन रखी है। इससे यह अनुमान लगाया गया है कि ऊर्जा की कमी जिन क्षेत्रों में दिखाई दे रही है, उन सभी क्षेत्रों में इसका इस्तेमाल करके इस कमी को पूरा किया जा सकता है।

दुनियाभर में परिवहन, पत्तन और स्टील सहित कई क्षेत्रों को कार्बन-मुक्त करने के लिए हाइड्रोजन की मांग तेजी से बढ़ रही है। विशेषज्ञों के अनुसार, भारत में हाइड्रोजन का बड़ा भंडार है, जिसे 200 वर्ष से ज्यादा समय तक जरूरी ऊर्जा के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। सबसे दिलचस्प बात यह है कि हाइड्रोजन का इस्तेमाल नए आविष्कारों के जरिए घरेलू इस्तेमाल के लिए जल्द ही सुलभ हो सकता है। नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता जोड़ने की वार्षिक आवश्यकता के बारे में बताया गया कि भारत बिजली खरीद या बिक्री समझौतों पर हस्ताक्षर के लिए पहले से ही लंबित 40 गीगावाट क्षमता पर ध्यान केंद्रित करेगा।

भारत ने वर्ष 2047 तक ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर होने के लक्ष्य की घोषणा की है। इन लक्ष्यों को हासिल करने की दिशा में हरित हाइड्रोजन महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इसका उत्पादन कई नजरिए से खास है। पर्यावरणीय मानकों पर यह सबसे खरा उतरता है, क्योंकि हरित हाइड्रोजन का उत्पादन, इलेक्ट्रोलिसिस द्वारा किया जाता है। इस प्रक्रिया में सौर, पवन या जलविद्युत जैसे अक्षय स्रोतों से उत्पन्न बिजली का इस्तेमाल कर पानी को आक्सीजन और हाइड्रोजन में विभाजित किया जाता है। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप स्वच्छ और उत्सर्जन-मुक्त ईंधन प्राप्त होता है। इसमें जीवाश्म ईंधन को प्रतिस्थापित करने और कार्बन उत्सर्जन को कम करने की अपार क्षमता है।

दुनियाभर में परिवहन, पत्तन और स्टील सहित कई क्षेत्रों को कार्बन-मुक्त करने के लिए हाइड्रोजन की मांग तेजी से बढ़ रही है। विशेषज्ञों के अनुसार भारत में हाइड्रोजन का अकूत भंडार है, जिससे दो सौ वर्ष से ज्यादा समय के लिए जरूरी ऊर्जा के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। सबसे दिलचस्प बात यह है कि हाइड्रोजन का इस्तेमाल नए आविष्कारों के जरिए घरेलू उपयोग के लिए जल्द ही सुलभ हो सकता है। नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता जोड़ने की वार्षिक आवश्यकता के बारे में बताया गया है कि भारत बिजली खरीद या बिक्री समझौतों पर हस्ताक्षर के लिए पहले से ही लंबित 40 गीगावाट क्षमता पर ध्यान केंद्रित करेगा। यह भी बताया गया है कि वर्तमान में कार्यान्वयन के विभिन्न चरणों में 160 गीगावाट की नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाएं प्रक्रियाधीन हैं। भारत को वर्ष 2030 तक 500 गीगावाट ऊर्जा क्षमता का लक्ष्य हासिल करने के लिए हर साल कम से कम 50 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता जोड़नी होगी।

अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों की शुरुआती परियोजनाओं के लिए नए प्रस्ताव आमंत्रित किए जा चुके हैं। इसमें सौ करोड़ रुपए के परिव्यय के साथ हरित हाइड्रोजन के उत्पादन के लिए जैविक पदार्थ का उपयोग शामिल है। हरित हाइड्रोजन के उत्पादन के लिए जैविक पदार्थों के उपयोग सहित अत्याधुनिक तकनीक को जोड़ा जाएगा। इन परियोजनाओं के लिए कुल सौ करोड़ रुपए का आबंटन किया गया है जो एनजीएचएम के तहत नवउद्यम योजनाओं के लिए पहले से आबंटित सौ करोड़ रुपए के अतिरिक्त है। गौरतलब है एनजीएचएम का उद्देश्य भारत को हरित हाइड्रोजन के उत्पादन, उपयोग एवं निर्यात का वैश्विक केंद्र बनाना है। इसका परिव्यय 19,744 करोड़ रुपए है। साथ ही इसका लक्ष्य 125 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता, आठ लाख करोड़ रुपए से अधिक का निवेश और छह लाख से अधिक हरित रोजगार उत्पन्न करना भी है। रोजगारपरक होने की वजह से इस क्षेत्र में रोजगार की बेहतर संभावनाएं हैं। इसलिए सरकार इस क्षेत्र को प्राथमिकता दे रही है।

ऊर्जा जरूरतों की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए केंद्र सरकार हाइड्रोजन सहित सौर ऊर्जा, जल विद्युत ऊर्जा या पवन ऊर्जा को बढ़ावा देने में जुटी है, इनसे आने वाले वक्त में कई क्षेत्र में ऊर्जा की कमी से कार्यों में आने वाली रुकावटों से निजात मिलेगी। इससे सबसे बड़ा फायदा पर्यावरणीय समस्याओं से निजात पाने में दिखाई देगा। देश के बड़े शहरों, नगरों और कस्बों में कार्बन और धूल प्रदूषण से बीमारियों सहित होने वाली तमाम परेशानियों से लोग बचेंगे। इससे अरबों रुपए बचेंगे। साथ ही साथ हड्डी, मस्तिष्क, रक्त, आंत, आंख और सांस आदि से ताल्लुक रखने वाली बीमारियों में कमी आएगी और औसत उम्र में वृद्धि भी होगी।

आवश्यक हुआ एआइ को अपनाना

जसप्रीत बिंद्रा

आने वाला साल हमें यह तय करने पर मजबूर करेगा कि हम एआइ के साथ कैसे जिएं, काम करें और शासन करें

सहयोगी का रूप लेती एआइ तकनीक ● प्रतीकात्मक

अगर 2024 वह साल था, जब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) ने बोलना सीखा तो 2025 वह साल रहा, जब एआइ के हाथ बढ़े और उसका दायरा एवं प्रभाव बढ़ा। यह वह वर्ष रहा, जब एआइ निर्णायक रूप से डेमो और पायलट प्रोजेक्ट्स से आगे निकलकर वास्तविक क्रियान्वयन, स्वायत्तता और बड़े पैमाने पर उपयोग में उतरा। चर्चा एआइ टूल्स के इस्तेमाल से आगे बढ़कर एआइ एजेंट्स के निर्माण पर आ गई। जेनरेटिव एआइ की जगह एजेंटिक एआइ प्रमुख अवधारणा बन गई। एजेंटिक एआइ ऐसे सिस्टम को कहते हैं, जो सिर्फ इंसानों को सलाह नहीं देते, बल्कि एंटरप्राइज सॉफ्टवेयर के भीतर बहु-चरणीय वर्कफ्लो को स्वयं अंजाम देते हैं। एजेंटिक ब्राउजर्स से लेकर आटोनामस कामर्स और वर्कफ्लो आटोमेशन तक, एआइ एक सहायक से बढ़कर जूनियर सहयोगी की तरह व्यवहार करने लगा। वर्ष 2025 आत्ममंथन का भी साल रहा। कंपनियों ने दिखावटी प्रयोगों को छोड़कर ठोस और मापने योग्य रिटर्न आन इन्वेस्टमेंट की मांग शुरू की। एआइ को अपनाना अब अपवाद नहीं, बल्कि जरूरत बन गया। कोडिंग पहला ऐसा उपयोग क्षेत्र बना, जहां एआइ का व्यापक पैमाने पर असर दिखा। क्लाड, कर्सर और कोपायलट जैसे एआइ टूल्स एंटरप्राइज स्तर पर 40 प्रतिशत से अधिक नया कोड तैयार करने लगे। इसके साथ ही सॉफ्टवेयर इंजीनियर की भूमिका भी बदलने लगी। अब वह सिर्फ कोड लिखने वाला नहीं, बल्कि मशीन श्रम का पर्यवेक्षक और सिस्टम आर्किटेक्ट बनता जा रहा है। सेमीकंडक्टर चिप बनाने वाली कंपनी एनवीडिया के सीईओ जेंसन हुआंग के शब्दों में कहें तो हम सॉफ्टवेयर एजेंट्स के लिए एचआर मैनेजर बन गए हैं।

इस गुजरते साल पर्दे के पीछे एआइ की भौतिक नींव भी तैयार हो रही थी। एटम्स फार एल्गोरिदम्स आंदोलन के तहत बड़ी टेक कंपनियों ने गीगावाट-स्तरीय डाटा केंद्रों को ऊर्जा देने के लिए परमाणु ऊर्जा की ओर रुख किया। एआइ ने सिर्फ सॉफ्टवेयर को नहीं बदला, बल्कि वैश्विक ऊर्जा अवसंरचना को भी नए सिरे से आकार देना शुरू कर दिया। इसी बीच चीन ने बिना शोर-शराबे के वर्ष 2025 में बढ़त बना ली। उसका फोकस एजीआइ (आर्टिफिशियल जनरल इंटेलिजेंस) की समय-सीमाओं की घोषणा करने के बजाय अनुप्रयोगों, ओपन-सोर्स नेतृत्व और ऊर्जा प्रचुरता पर रहा। एजीआइ को मानव-स्तरीय एआइ भी कहा जाता है। यह एक ऐसी कृत्रिम बुद्धिमत्ता है, जो लगभग सभी संज्ञानात्मक कार्यों में मानव क्षमताओं के बराबर या उनसे भी आगे निकल सकती है। ओपन-सोर्स का स्वामित्व एक बार फिर दीर्घकालिक रणनीतिक बढ़त साबित हुआ। बीत रहा वर्ष एआइ के स्याह पहलुओं को भी उजागर कर गया। हम उनकी अनदेखी नहीं कर सकते। डीपफेक्स ने दुनिया भर में लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के लिए खतरा पैदा किया, एआइ कंपैनियंस ने अकेलेपन और मानवीय संबंधों को लेकर असहज सवाल खड़े किए और उद्योग एक डाटा सीमा से टकरा गया, जिससे सिंथेटिक डाटा की ओर झुकाव बढ़ा। इसके बावजूद इस साल के अंत तक गूगल एक अप्रत्याशित एआइ लीडर के रूप में उभरा, जिसने चिप्स, माडल्स, डाटा और डिस्ट्रीब्यूशन में अपनी फुल-स्टैक ताकत का लाभ उठाया।

अगर वर्ष 2025 क्षमताओं का साल था तो 2026 विवेक का होगा। हम उस दौर में प्रवेश कर रहे हैं, जिसे रीजनिंग वेब का युग कहा जाता है, जहां सर्च इंजन लिंक दिखाने के बजाय सीधे उत्तर देने वाले इंजन बन जाएंगे और एआइ ब्राउजर ज्ञान को समेटकर प्रस्तुत करेंगे। हालांकि इससे वेब की आर्थिक संरचना को नए सिरे से गढ़ना पड़ेगा, अन्यथा यह उन्हीं क्रिएटर्स को नुकसान पहुंचाएगा, जिन पर एआइ निर्भर है। इसी समय एजेंट्स कोपायलट से आगे बढ़कर सहयोगी बन जाएंगे और हल्की मानवीय निगरानी में पूरे वर्कफ्लो चला सकेंगे। वर्ष 2026 वह साल भी होगा, जब एआइ को शरीर मिलेगा। फिजिकल एआइ यानी रोबोट्स और आटोनामस सिस्टम्स प्रयोगशालाओं से बाहर निकलकर वेयरहाउस, फैक्ट्रियों और शहरों की सड़कों तक पहुंचेंगे। सेल्फ-ड्राइविंग कारों का अलग-अलग शहरों और महाद्वीपों में विस्तार इस बात का संकेत है कि एंबेडेड इंटेलिजेंस अब कल्पना नहीं, बल्कि वास्तविक संचालन बन चुकी है। सेल्फ-ड्राइविंग कारें इंसानी हस्तक्षेप के बिना चल सकती हैं। अगले साल एआइ वैल्यूएशंस में सुधार जरूर आएगा, लेकिन गिरावट नहीं, क्योंकि तकनीक ठोस है, इन्फ्रास्ट्रक्चर गहरा है और कैश फ्लो मजबूत है। इसके बजाय जो चीज सबसे मूल्यवान बनेगी, वह है मानवीय तत्व। जब एआइ-जेनरेटेड कंटेंट इंटरनेट पर बाढ़ की तरह फैल जाएगा, तब सत्यापित मानवीय रचनात्मकता, विवेक और जुड़ाव एक तरह की लक्जरी बन जाएंगे।

कुल मिलाकर दुनिया के साथ-साथ भारत के लिए भी 2026 एआइ के क्षेत्र में एक निर्णायक क्षण लेकर आएगा। संप्रभु एआइ इन्फ्रास्ट्रक्चर, क्षेत्रीय भाषाओं में कंटेंट का विस्फोट और जीपीयू (ग्राफिक्स प्रोसेसिंग यूनिट) तक पहुंच अब वास्तविक लगने लगी है। अगर 2025 ने हमें दिखाया कि एआइ क्या कर सकता है तो 2026 हमें यह तय करने पर मजबूर करेगा कि हम उसके साथ कैसे जिएं, काम करें और शासन करें। कच्ची बुद्धिमत्ता का युग पीछे छूट चुका है। अब विवेक का युग शुरू हो रहा है।

(लेखक एआइ एंड वियांड के को-फाउंडर हैं)
response@jagran.com

Dainik Jagaran Page No-10

सांस्कृतिक एकता का सूत्र

सीपी राधाकृष्णन

काशी-तमिल संगमम अतीत की सांस्कृतिक विरासत, वर्तमान की जीवंत सहभागिता और भविष्य के विकसित भारत संकल्प को एक सूत्र में पिरोता है

भारत के सनातन सांस्कृतिक आत्मा को यदि किसी एक पवित्र मंच पर सजीव रूप में देखा जा सकता है, तो वह है काशी-तमिल संगमम। यह एक ऐसा अनूठा उत्सव है, जहां उत्तर और दक्षिण की संस्कृति, सभ्यताएं, भाषाएं और परंपराएं एक विराट भारतीय परिवार की तरह एक-दूसरे का आलिंगन करती हैं। संगमम के चौथे संस्करण के अवसर पर मैंने गहराई से यह अनुभव किया कि काशी और तमिलनाडु का यह संबंध केवल भौगोलिक या ऐतिहासिक नहीं, बल्कि हजारों वर्षों से बहती आध्यात्मिक सांस्कृतिक धारा का अविरल प्रवाह है। काशी अविनाशी है, अनादि काल से है। काशी को प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति की राजधानी कहा जाता है। दूसरी ओर तमिलनाडु, जिसकी भाषा विश्व की प्राचीनतम जीवित भाषाओं में से एक है, भारत की सनातन परंपरा, साहित्य, संगीत और दर्शन का महान वाहक रहा है। काशी-तमिल संगमम इन दोनों सभ्यतागत स्तंभों के बीच के सेतु को पुनः सुदृढ़ करता है। उत्तर और दक्षिण के बीच यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान कोई नया प्रसंग नहीं है। देवारम नालवर के भक्ति गीतों से लेकर काशी में गूंजते संत कबीर के भजनों तक साधना की भाषा एक ही रही है। वह है भक्ति, ज्ञान, मानवता की भाषा।

काशी में तमिल संतों की उपस्थिति और दक्षिण भारत में काशी को 'मोक्ष की नगरी' के रूप में मान्यता, इस गहरे संबंध को प्रमाणित करती है। प्रधानमंत्री मोदी की दूरदर्शिता और एक भारत, श्रेष्ठ भारत के दृढ़ संकल्प से 2022 में यह कार्यक्रम शुरू हुआ। आज यह कार्यक्रम राष्ट्रीय एकता के एक प्रमुख प्रतीक के रूप में विकसित हुआ है। यहां गंगा की संस्कृति और कावेरी की परंपराएं एक-दूसरे से मिलकर भारत की सांस्कृतिक अखंडता को आगे बढ़ाती हैं। प्रधानमंत्री ने हाल में 'मन की बात' में इस उत्सव का उल्लेख करते हुए कहा था कि ''यह संगमम विश्व के प्राचीनतम नगरों में से एक काशी और विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक तमिल का संगम है।'' उन्होंने तमिल भाषा और संस्कृति को भारत का गौरव बताते हुए सभी से तमिल सीखने का आग्रह भी किया। यह आग्रह भारत की भाषाई विविधता को अपनाने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम है।

काशी-तमिल संगमम के प्रत्येक संस्करण में तमिलनाडु के छात्र, अध्यापक, लेखक, मीडिया प्रोफेशनल्स, कृषि और उससे जुड़े क्षेत्रों के लोग, महिलाएं और आध्यात्मिक विद्वान काशी आते रहे हैं। इस दौरान वे काशी के मंदिरों, तमिल से संबंधित केंद्रों और

अवधेश राणावत

अयोध्या एवं प्रयागराज जैसे नगरों से परिचित होते हैं। चौथे संस्करण ने संगमम की सीमा और महत्वाकांक्षा को बढ़ाया है। काशी-तमिल संगमम 4.0 में युवाओं की भागीदारी विशेष रूप से उल्लेखनीय रही है। विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों के छात्रों को इस कार्यक्रम से जोड़ने का उद्देश्य भावी पीढ़ी में राष्ट्रीय एकता की चेतना को और गहराई देना है। संगमम के दौरान उत्तर प्रदेश के 300 विद्यार्थी तमिलनाडु पहुंचे हैं और विभिन्न संस्थानों में तमिल भाषा सीख रहे हैं। उन्हें तमिलनाडु की समृद्ध परंपराओं, त्योहारों और भारतीय परंपरा की एकता से भी परिचित कराया जाएगा। तमिलनाडु से भी 50 तमिल शिक्षक वाराणसी पहुंचे हैं और संगमम के दौरान 1,500 से अधिक छात्रों को तमिल सिखाने का प्रयास कर रहे हैं। तमिल की मधुर ध्वनि काशी में गूंजी, इससे अधिक गौरव की बात क्या हो सकती है?

काशी-तमिल संगमम 4.0 की एक और विशिष्ट और प्रेरक पहल 'अगस्त्य अभियान' है। यह अभियान तमिलनाडु के तेनकाशी से काशी तक एक प्राचीन सभ्यतागत मार्ग को पुनर्स्थापित करता है। महर्षि अगस्त्य भारतीय सभ्यता के उन महान ऋषियों में से हैं, जिन्होंने उत्तर और दक्षिण के बीच सांस्कृतिक संवाद को सुदृढ़ किया। उन्हें तमिल भाषा और सिद्ध चिकित्सा का प्रवर्तक माना जाता है। वे तमिल संस्कृति को उत्तर भारत तक ले कर आए। अगस्त्य अभियान उनके उसी योगदान को स्मरण करते हुए उत्तर-दक्षिण के सांस्कृतिक संबंधों को पुनः रेखांकित करता है।

काशी-तमिल संगमम 4.0 यह संकेत देता है कि भारत अपनी प्राचीन सभ्यतागत जड़ों को सहेजते हुए आत्मविश्वास के साथ भविष्य की ओर अग्रसर है। यह आयोजन हमें स्मरण कराता है कि राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में अतीत की स्मृतियां केवल विरासत नहीं, बल्कि वर्तमान को दिशा देने वाली प्रेरणा होती हैं। ऐसे मंचों के माध्यम से सांस्कृतिक संवाद, आंतरिक एकता और राष्ट्रीय चेतना को निरंतर सुदृढ़ किया जा रहा है। संगमम अतीत की सांस्कृतिक विरासत, वर्तमान की जीवंत सहभागिता और भविष्य के विकसित भारत जैसे राष्ट्रीय संकल्प, तीनों को एक सूत्र में पिरोता है। यह स्पष्ट करता है कि भारत का विकास केवल आर्थिक या तकनीकी प्रगति तक सीमित नहीं है, बल्कि उसकी जड़ें सांस्कृतिक आत्मविश्वास और सभ्यतागत चेतना में निहित हैं। काशी तमिल संगमम 4.0 ने यह स्पष्ट किया कि भारत सरकार सांस्कृतिक एकीकरण के लिए पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध है। इस आयोजन ने विभिन्न समुदायों को जोड़ा है। इसने यह पुनः स्थापित किया है कि भारत की सभ्यतागत शक्ति उसकी विविधता की एकता में निहित है। आज जब विश्व विविधताओं के बीच तनाव और संघर्षों से जूझ रहा है, तब भारत का विविधता को उत्सव के रूप में स्वीकार करना वैश्विक संदर्भ में भी प्रेरणास्पद बनकर उभरता है।

महाकवि सुब्रमण्य भारती ने एक ऐसे भारत का सपना देखा था, जहां सिंधु तट पर तेलुगु गीत गाए जाएं और कावेरी की धरती के बच्चे गंगा के तट पर उत्सव मनाएं। उस स्वप्न ने काशी-तमिल संगमम के माध्यम से आज मूर्त रूप ले लिया है। इस संगमम से प्रेरणा लेकर हम कह सकते हैं: 'कावेरी की पुत्री, गंगा के तट पर गाती है, भक्ति की मधुर धारा में, अपनी धुन मिलाती है। गंगा का पुत्र भी, कावेरी के तट पर आता है, तमिल के मीठे स्वरों में, भारत का नाद सुनाता है।' काशी से शुरू हुआ यह कार्यक्रम, तमिल आध्यात्मिक विरासत की सबसे पवित्र जगहों में से एक रामेश्वरम में खत्म होगा। यही वह सेतु है, जो उत्तर और दक्षिण को जोड़ता है और भारत को एक परिवार होने की अनुभूति कराता है।

(लेखक उपराष्ट्रपति हैं)
response@jagran.com

Dainik Jagaran Page No-10

टैरिफ से तनाव के बावजूद बढ़ा भारत

अरुण कुमार | वरिष्ठ अर्थशास्त्री

सिंहावलोकन- 2025

अमेरिकी नीति के कारण भारत के निर्यात, रुपये की कीमत, निवेश आदि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। पेश है बीतते साल में अर्थव्यवस्था के खास दस पहलू :

इस वर्ष भारतीय अर्थव्यवस्था को भारी अनिश्चितताओं का सामना करना पड़ा। इसका बड़ा कारण अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा भारत पर लगाया गया टैरिफ रहा। इसकी वजह से भारत के निर्यात, भुगतान संतुलन, डॉलर के मुकाबले रुपये की कीमत, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश आदि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

दरअसल, ट्रंप ने नवंबर 2024 में अमेरिकी चुनाव जीता और तभी से यह आशंका थी कि वह अमेरिका-हितैषी नीतियों को आक्रामक रूप से आगे बढ़ाएंगे। उन्होंने अपने चुनाव प्रचार में भारत व चीन पर अमेरिकी कामगारों की अच्छी नौकरियां छीनने का आरोप लगाया और उनको वापस लाने का वादा भी किया। यह संकेत था कि दूसरे देशों में अमेरिकी निवेश घटेगा। उनके सत्ता संभालने के बाद कमोबेश ऐसा ही हुआ।

भारत में साल 2024 में सार्वजनिक निवेश में वृद्धि के बावजूद निजी निवेश कमजोर था, जिसका असर विकास और रोजगार-सृजन पर पड़ रहा था। रिजर्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार, पिछले कई वर्षों से 70 से 75 फीसदी क्षमता का ही उपयोग हो रहा था, जो अर्थव्यवस्था में कमजोर मांग का संकेत था।

इस पृष्ठभूमि में यदि हम इस वर्ष का विश्लेषण करें, तो 10 बड़ी घटनाएं नजर आती हैं। पहली- 1 फरवरी, 2025 को पेश किया गया केंद्रीय बजट, जिसमें मांग को बढ़ावा देने के लिए आयकर छूट की सीमा बढ़ाकर 12 लाख कर दी गई। उम्मीद थी कि इससे मध्यम वर्ग के हाथों में खर्च करने लायक पैसे होंगे और वे अपना उपभोग बढ़ाएंगे। मगर इसमें असंगठित क्षेत्र को अछूता छोड़ दिया गया। हालांकि, बजट ने राष्ट्रपति ट्रंप को यह संकेत भी दिया कि भारत प्रमुख अमेरिकी निर्यातों पर सीमा शुल्क कम करके अमेरिका के साथ अपना ट्रेड-सरप्लस कम करेगा।

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अपनी नीति से डिगे नहीं और 13 फरवरी को उन्होंने व्यापारिक साझेदारी वाले देशों से आयात पर व्यापक पारस्परिक सीमा शुल्क लगाने वाले आदेश पर हस्ताक्षर कर दिए। भारत को उम्मीद थी कि रणनीतिक साझेदार होने के नाते उसके साथ अनुकूल व्यवहार किया जाएगा। मगर जब 2 अप्रैल को टैरिफ की घोषणा की गई, तो भारत पर 25 प्रतिशत शुल्क का एलान किया गया। हालांकि, इसे जुलाई तक स्थगित रखा गया, क्योंकि राष्ट्रपति ट्रंप 90 दिनों में 90 देशों के साथ 90 समझौते करना चाहते थे। जुलाई में, व्यापार समझौते पर सहमति न बनने पर टैरिफ लगाने की समय-सीमा बढ़ाकर 1 अगस्त की गई, पर 7 अगस्त को ट्रंप ने रूस से कच्चा तेल खरीदने के लिए भारत पर अतिरिक्त 25 फीसदी टैरिफ लगाने की घोषणा भी कर दी। यह साल की दूसरी बड़ी आर्थिक घटना थी।

तीसरी महत्वपूर्ण घटना इसी से जुड़ी है, जो है- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा स्वतंत्रता दिवस के भाषण में कई वस्तुओं पर जीएसटी कम करने का एलान करना। इसका उद्देश्य कीमतों को कम करना और खपत को बढ़ावा देना था, ताकि अमेरिका द्वारा लगाए गए दंडात्मक टैरिफ के नकारात्मक प्रभाव बेअसर किए जा सकें। हालांकि, इससे सितंबर में बिक्री में ठहराव आया, लेकिन जीएसटी दरों में कमी होते ही फिर से यह तेजी से बढ़ी, खासकर लग्जरी उत्पादों की बिक्री में।

चौथी घटना पहली और दूसरी तिमाही के जीडीपी आंकड़ों की घोषणा रही। इन आंकड़ों से आर्थिक वृद्धि में तेज उछाल दिखाई दिया। आईएमएफ का हवाला देते हुए यह दावा भी किया गया कि जापान को पीछे छोड़ते हुए भारत चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। मगर बाद में पता चला कि यह एक अनुमान था, जो साल के अंत तक के लिए लगाया गया था और कई कारकों पर निर्भर था (जैसे- महंगाई और डॉलर के मुकाबले रुपये की कीमत आदि)।

पांचवीं घटना रही, भारत के जीडीपी आंकड़ों की विश्वसनीयता पर आईएमएफ द्वारा संदेह जताना। विशेष रूप से असंगठित क्षेत्र से प्राप्त आंकड़े व जीडीपी में भारी अंतर को लेकर उसकी शंकाएं थीं। इसका असर विदेशी निवेशकों पर पड़ा और उन्होंने भारत से पैसा निकालना शुरू कर दिया। विदेशी संस्थागत निवेशक भारत से पैसा निकालकर अब अमेरिका में निवेश कर रहे हैं, जहां प्रौद्योगिकी कंपनियों के शेयरों में तेजी के कारण शेयर बाजार में उछाल आया है।

रुपये का गिरना छठी घटना है। डॉलर के मुकाबले यह रिकॉर्ड 91 के पार चला गया। टैरिफ और सोने के आयात के कारण चालू खाता घाटा बढ़ गया है। हालांकि, पहले पूंजी खाता इसे सहारा देता था, लेकिन अब यह भी ऋणात्मक हो गया है।

आठवें वेतन आयोग की स्थापना का एलान सातवीं अहम घटना थी। इस आयोग के नियम पिछले आयोगों से अलग हैं। ऐसा केंद्र व राज्यों की कमजोर आर्थिक दशा के कारण हो रहा है। इस स्थिति को मैं आठवीं महत्वपूर्ण घटना मानता हूं। वित्त आयोग ने पिछले महीने अपनी रिपोर्ट पेश कर दी है, जो राजकोषीय संघवाद को प्रभावित कर सकती है, खासतौर से इसलिए, क्योंकि 'फ्रीबीज' पर अधिक जोर देने के कारण कई राज्य सरकारों की आर्थिक सेहत खराब है।

नौवीं घटना है- परमाणु दायित्व से संबंधित शांति विधेयक का पारित होना। इसको राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने भी मंजूरी दे दी है। इससे परमाणु ऊर्जा संयंत्रों की स्थापना में तेजी आएगी और जीवाश्म ईंधन का उपयोग घटेगा। इसके साथ ही उच्च शिक्षा विधेयक को संसदीय समिति के पास विचार-विमर्श के लिए भेजने की मंजूरी भी दी गई है। इससे भारत में उच्च शिक्षा को अधिक स्वायत्तता मिलेगी। इसकी सफलता भारतीय अनुसंधान और विकास को गति देगी, जिसमें हम अन्य देशों से पिछड़ रहे हैं। ये प्रयास परोक्ष रूप से भारतीय अर्थव्यवस्था को गति देने में सहायक साबित हो सकते हैं।

आखिरी घटना है, श्रम कानूनों में किया गया बदलाव। इसे अनायास लागू करने की घोषणा की गई और 'वीबी जी राम जी' यानी विकसित भारत- रोजगार एवं आजीविका के लिए गारंटी मिशन (ग्रामीण) विधेयक भी लाया गया। इसको भी राष्ट्रपति ने मंजूर कर लिया है और अब यह कानून का रूप ले चुका है। हालांकि, आकलन है कि श्रम सुधारों की यह कवायद इसलिए की जा रही है, ताकि निर्यात बढ़ाए जा सकें और कृषि बाजार अमेरिकी आयात के लिए खुल सकें।

कुल मिलाकर, 2025 की तमाम आर्थिक घटनाएं राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मौजूद अनिश्चितताओं से जुड़ी हुई थीं। देखना होगा कि नए साल में ये किस तरह हमारी अर्थव्यवस्था को आकार देंगी।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

Hindustan Page No-16

बांग्लादेश में तारिक रहमान की वापसी से कितनी उम्मीदें

यहां स्कैन करें

रहीस सिंह | विदेशी मामलों के वरिष्ठ अध्येता

जुलाई विद्रोह के बाद बांग्लादेश आज जब सत्ता से संस्था और सड़क तक नेतृत्व के वैक्यूम से गुजर रहा है, तब पूर्व प्रधानमंत्री बेगम खालिदा जिया के बेटे तारिक रहमान 17 साल के स्वनिर्वासन से अपने देश लौट आए हैं। ऐसे में, जब सरकार के मुख्य सलाहकार मोहम्मद यूनुस देश को कट्टरपंथियों के सहारे आगे बढ़ाने की कोशिश में असफल दिख रहे हैं, तब तारिक रहमान को क्या ऐसे नेता के रूप में स्वीकार किया जा सकता है, जो उस वैक्यूम को भर सके? क्या जुलाई विद्रोह के बाद उभरे राजनीतिक दल भी तारिक रहमान को देश के भावी नेता के तौर पर स्वीकार कर पाएंगे?

मोटे तौर पर माना जा सकता है कि तारिक रहमान बांग्लादेश में इस समय अकेले ऐसे नेता हैं, जिनके पास एक ऐसी पार्टी है, जिसका प्रभाव और संगठन देशव्यापी है। इसमें कोई संशय नहीं कि बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) का काडर, स्थानीय नेतृत्व और चुनावी मशीनरी उनके इर्द-गिर्द संगठित है, पर तारिक रहमान न तो जुलाई विद्रोह का चेहरा रहे हैं और न उसके वैचारिक सूत्रधार। ऐसे में, वर्तमान परिदृश्य में उनकी स्वीकारोक्ति कितनी होगी, यह कहना मुश्किल है। उनकी वापसी आंदोलन से उपजी आवश्यकता नहीं है, राजनीतिक अवसर मात्र है।

जुलाई विद्रोह के नेताओं की महत्वाकांक्षाएं बड़ी हैं और उनके पीछे खड़ी शक्तियां आसानी से तारिक को नेता स्वीकार कर लेंगी, इसमें संदेह है।

आंदोलित लोगों को उम्मीद थी कि मोहम्मद यूनुस शेख हसीना के हटने के बाद एक बेहतर व्यवस्था की नींव रखेंगे, मगर बांग्लादेश तो अराजकता, हिंसा और कट्टरपंथ की ओर चला गया, जिसमें आंदोलनकारी छात्रों की उम्मीदें भी बह गईं। आज यूनुस और उनकी सरकार कठघरे में है। जुलाई विद्रोह से उभरे कट्टरपंथी युवा नेता उस्मान हादी के भाई का सीधा आरोप है कि उनके भाई को सरकार से जुड़े लोगों ने ही मरवाया है, ताकि फरवरी में होने वाले चुनाव टाले जा सकें। यह स्थिति मोहम्मद यूनुस के अनुकूल नहीं है। तो क्या तारिक रहमान के अनुकूल है? संभवतः नहीं और हां भी।

नहीं इसलिए, क्योंकि तारिक रहमान पर अपराध व भ्रष्टाचार के कई आरोप रहे हैं, जिनके कारण उन्हें लंदन में लंबा निर्वासन बिताना पड़ा। हालांकि, उन्हें 2004 के ग्रेनेड हमले और जिया ऑर्फनेज ट्रस्ट जैसे बड़े मामलों में बरी किया जा चुका है, लेकिन पार्टी के भीतर वंशवादी नेतृत्व की आलोचना और 'नॉन टेस्टेड' नेतृत्व क्षमता को देखते हुए उन्हें ट्रांजिशनल फीगर से आगे नहीं ले जाया जा सकता। इसमें कोई संशय नहीं कि यदि बीएनपी जीती, तो वह प्रधानमंत्री पद के सबसे प्रबल दावेदार होंगे, पर वह राष्ट्रीय राजनीतिक सहमति के प्रतिनिधि बनेंगे, यह कहना अतार्किक होगा।

तारिक रहमान को आपसी भाईचारे वाला नेता कहना भी अभी जल्दबाजी होगी। भले ही ढाका की रैली में वह यह एलान करते दिखे कि जैसे देश के लोगों ने 1971 में आजादी हासिल की थी, वैसे ही एक बार फिर बांग्लादेश की संप्रभुता की रक्षा के लिए ये लोग एकजुट होंगे। मगर इस ऐतिहासिक तथ्य को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि बीएनपी के शासन में जमात-ए-इस्लामी सत्ता में साझेदार रही थी। उस दौर में जेहादी नेटवर्क में खूब वृद्धि हुई थी और अल्पसंख्यक हिंसा के शिकार बने थे।

जो भी हो, बांग्लादेश इस समय हिंसा और अराजकता के ऐतिहासिक दौर से गुजर रहा है। मीडिया के जरिये आई तस्वीरें बताती हैं कि अराजक भीड़ के लक्ष्य कुछ संस्थान और कुछ समुदाय हैं। भीड़ में शामिल लोग अमानवीयता के वे चेहरे हैं, जो तालिबान को भी मात दे रहे हैं। जमात-ए-इस्लामी छात्र संगठनों, धार्मिक नेटवर्कों व डिजिटल मंचों के जरिये भारत विरोधी नैरेटिव गढ़ रही है। इसलिए यह भर कह देना शायद अतार्किक होगा कि सत्ता बदली है, ट्रिब्यूनल सक्रिय हुआ है, शेख हसीना को मानवता के खिलाफ अपराधी करार देकर मृत्युदंड की सजा सुना दी गई है और अवामी लीग को चुनाव के लिए अयोग्य संगठन करार दे दिया गया है, बस। नहीं, यह पटकथा अधूरी है।

सच है कि बांग्लादेश न केवल शांति, बल्कि लोकतंत्र से भी अभी बहुत दूर खड़ा है। जुलाई विद्रोह के नेताओं की महत्वाकांक्षाएं बहुत बड़ी हैं और उनके पीछे खड़ी शक्तियों के खेल इससे भी अधिक महत्वाकांक्षाओं वाले हैं। ये स्थितियां इतनी आसानी से तारिक रहमान को एक नेता के तौर पर स्वीकार करती हुई नहीं दिखतीं।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

प्रश्न : "टैरिफ से तनाव के बावजूद बढ़ता भारत" — कथन के आलोक में भारत की आर्थिक स्थिति का विश्लेषण कीजिए।
(शब्द सीमा : लगभग 400 शब्द

भूमिका

- वैश्विक अर्थव्यवस्था में संरक्षणवाद, टैरिफ युद्ध और भू-राजनीतिक तनाव के बावजूद भारत ने आर्थिक मजबूती और विकास की क्षमता का प्रदर्शन किया है।
- अमेरिका सहित विकसित देशों की टैरिफ नीतियों से चुनौतियाँ उत्पन्न हुईं, फिर भी भारत की अर्थव्यवस्था अपेक्षाकृत लचीली बनी रही।

1. टैरिफ तनाव का वैश्विक संदर्भ

- अमेरिका द्वारा आयात शुल्क बढ़ाने से वैश्विक व्यापार प्रवाह प्रभावित।
- निर्यात, रुपये की विनिमय दर और विदेशी निवेश पर दबाव।
- आपूर्ति श्रृंखला में अनिश्चितता और लागत में वृद्धि।

2. भारत पर टैरिफ का प्रभाव

- कुछ निर्यात क्षेत्रों (इस्पात, एल्युमिनियम, टेक्सटाइल) पर नकारात्मक असर।
- रुपये पर दबाव और अल्पकालिक पूंजी प्रवाह में अस्थिरता।
- आईटी और सेवा क्षेत्र अपेक्षाकृत सुरक्षित रहे।

3. भारत की आर्थिक मजबूती के कारण

- **मजबूत घरेलू मांग** : खपत-आधारित विकास मॉडल।
- **जनसांख्यिकीय लाभांश** : युवा कार्यशील जनसंख्या।
- **विविधीकृत अर्थव्यवस्था** : कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्र का संतुलन।
- **मजबूत बैंकिंग प्रणाली** : एनपीए में कमी, ऋण प्रवाह में सुधार।

4. नीति-स्तरीय प्रतिक्रियाएँ

- 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' से घरेलू विनिर्माण को प्रोत्साहन।
- उत्पादन-संLinked प्रोत्साहन (PLI) योजनाएँ।
- निर्यात बाजारों का विविधीकरण (एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका)।
- व्यापार समझौतों और एफटीए पर जोर।

5. विदेशी निवेश और भारत की आकर्षण शक्ति

- वैश्विक कंपनियों के लिए भारत एक वैकल्पिक विनिर्माण केंद्र।
- स्थिर राजनीतिक वातावरण और सुधार-उन्मुख नीतियाँ।
- डिजिटल अर्थव्यवस्था और स्टार्ट-अप इकोसिस्टम की मजबूती।

6. चुनौतियाँ बनी हुई

- वैश्विक मंदी का संभावित प्रभाव।
- निर्यात-निर्भर क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धात्मक दबाव।
- ऊर्जा आयात और चालू खाता घाटा।
- विकसित देशों की बदलती व्यापार नीतियाँ।

7. अवसर और आगे की राह

- वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला के पुनर्गठन में भारत की भूमिका।
- हरित ऊर्जा, डिजिटल व्यापार और सेवाओं में विस्तार।
- कौशल विकास और तकनीकी उन्नयन।
- बहुपक्षीय मंचों पर भारत की बढ़ती आर्थिक कूटनीति।

निष्कर्ष

- टैरिफ तनाव भारत के लिए चुनौती अवश्य हैं, परंतु यह उसकी विकास यात्रा में बाधक नहीं बने।
- संरचनात्मक सुधारों, मजबूत घरेलू आधार और नीति-लचीलेपन के कारण भारत वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच भी उभरती आर्थिक शक्ति के रूप में आगे बढ़ रहा है।